हिंदी
सुलभभारती
छठी कक्षा

हिंदी सुलभभारती अध्ययन निष्पत्ति : छठी कक्षा

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया

सभी विद्‌यार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम विद्‌यार्थियों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए, ताकि उन्हें –

- हिंदी भाषा में बातचीत तथा चर्चा करने के अवसर हों ।
- प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों ।
- सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, फिल्म और ऑडियो–वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने, लिखने और चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों ।
- समूह में कार्य करने और एक–दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने–देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हों ।
- हिंदी के साथ–साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने–लिखने की सुविधा (ब्रेल/सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हों ।
- अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों ।
- हिंदी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ आयोजित हों, जैसे – शब्द खेल ।
- हिंदी भाषा में संदर्भ के अनुसार भाषा विश्लेषण (व्याकरण, वाक्य संरचना, विराम चिह्न आदि) करने के अवसर हों ।
- कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे – अभिनय (भूमिका अभिनय), कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और वृत्तांत लेखन के अवसर हों ।
- साहित्य और साहित्यिक तत्त्वों की समझ बढ़ाने के अवसर हों ।
- शब्दकोश का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन एवं सुलभ परिवेश हो ।
- सांस्कृतिक महत्त्व के अवसरों पर अवसरानुकूल लोकगीतों का संग्रह करने, उनकी गीतमय प्रस्तुति देने के अवसर हों ।

अध्ययन निष्पत्ति

विद्‌यार्थी –

06.15.01 विभिन्न प्रकार की ध्वनियों, सामाजिक संस्थाओं, परिसर एवं सामाजिक घटकों के संबंध में जानकारी तथा अनुभव को प्राप्त करने हेतु वाचन करते हैं तथा सांकेतिक चिह्नों का अपने ढंग से प्रयोग कर उसे दैनिक जीवन से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं ।

06.15.02 गद्‌य, पद्‌य तथा अन्य पठित/अपठित सामग्री के आशय का आकलन करते हुए तथा गतिविधियों/घटनाओं पर बेझिझक बात करते हुए प्रश्न निर्मिति कर प्रश्नों के सटीक उत्तर अपने शब्दों में लिखते हैं ।

06.15.03 किसी देखी–सुनी रचनाओं, घटनाओं, प्रसंगों, मुख्य समाचार एवं प्रासंगिक कथाओं के प्रत्येक प्रसंग को उचित क्रम देते हुए अपने शब्दों में प्रस्तुत करते हैं, उनसे संबंधित संवादों में रुचि लेते हैं तथा वाचन करते हैं।

06.15.04 संचार माध्यमों के कार्यक्रमों और विज्ञापनों को रुचिपूर्वक देखते, सुनते तथा अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं ।

06.15.05 प्रासंगिक कथाएँ/विभिन्न अवसरों, संदर्भों, भाषणों, बालसभा की चर्चाओं, समारोह के वर्णनों, जानकारियों आदि को एकाग्रता से समझते हुए सुनते हैं, सुनाते हैं तथा अपने ढंग से बताते हैं ।

06.15.06 हिंदीतर विविध विषयों के उपक्रमों एवं प्रकल्पों पर सहपाठियों से चर्चा करते हुए विस्तृत जानकारी देते हैं ।

06.15.07 भाषा की बारीकियों/व्यवस्था/ढंग पर ध्यान देते हुए सार्थक वाक्य बताते हैं तथा उचित लय–ताल, आरोह–अवरोह, हावभाव के साथ वाचन करते हैं ।

06.15.08 अपनी चर्चा में स्वर व्यंजन, विशेष वर्ण, पंचमाक्षर, संयुक्ताक्षर से युक्त शब्दों एवं वाक्यों के मानक उच्चारण करते हुए तथा गद्‌य एवं पद्‌य परिच्छेदों में आए शब्दों को उपयुक्त उतार–चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हुए अपने शब्द भंडार में वृद्‌धि करते हैं ।

06.15.09 हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं, देशभक्तिपरक गीत, दोहे, चुटकुले आदि रुचि लेते हुए ध्यानपूर्वक सुनते हैं, आनंदपूर्वक दोहराते तथा पढ़ते हैं ।

06.15.10 दैनिक लेखन, भाषण–संभाषण में उपयोग करने हेतु अब तक पढ़े हुए नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उनके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं तथा नए शब्दों का लघुशब्दकोश लिखित रूप में तैयार करते हैं ।

06.15.11 सुनी, पढ़ी सामग्री तथा दूसरों के द्‌वारा अभिव्यक्त अनुभव से संबंधित उचित मुद्‌दों को अधोरेखांकित करते हुए उनका संकलन करते हुए चर्चा करते हैं ।

06.15.12 विविध विषयों की गद्‌य–पद्‌य, कहानी, निबंध, घरेलू पत्र से संबंधित संवादों का रुचिपूर्वक वाचन करते है तथा उनका आकलन करते हुए एकाग्रता से उपयुक्त विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए सुपाठ्‌य– सुडौल, अनुलेखन, सुलेखन, शुद्‌ध लेखन करते हैं ।

06.15.13 अलग–अलग कलाओं, जीवनोपयोगी वस्तुओं की प्रदर्शनी एवं यात्रा वर्णन समझते हुए वाचन करते हैं तथा उनको अपने ढंग से लिखते हैं ।

स्वीकृति क्रमांक : मराशैसंप्रप/अविवि/शिप्र २०१५-१६/१६७३ दिनांक ६/४/२०१६

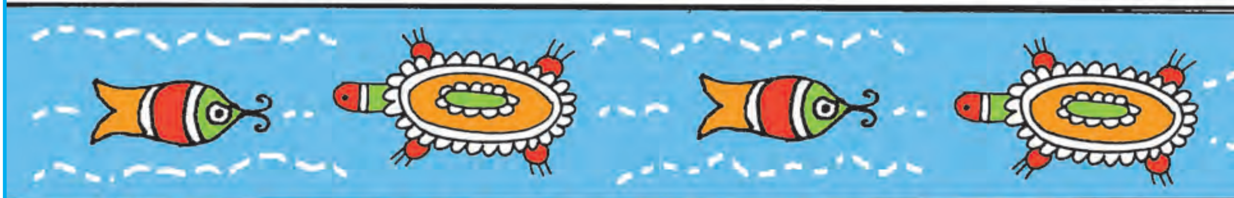

हिंदी
सुलभभारती
छठी कक्षा

मेरा नाम ________________ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

KAU5TN

आपके स्मार्टफोन में ‘DIKSHA App’ द्‍वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्‍यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१६
चौथा पुनर्मुद्रण : २०२०

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

मुख्य समन्वयक
श्रीमती प्राची रविंद्र साठे

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्‌य–अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील–सदस्य
प्रा.मैनोद्‌दीन मुल्ला–सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी–सदस्य
श्री संतोष धोत्रे–सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी–सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे–सदस्य
डॉ.अलका पोतदार–सदस्य–सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

डॉ.वर्षा पुनवटकर
सौ. वृंदा कुलकर्णी
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती माया कोथळीकर
डॉ.आशा वी. मिश्रा
श्री प्रकाश बोकील
श्री रामदास काटे
श्री रामहित यादव
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती शारदा बियानी
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुसकुटे
श्रीमती रत्ना चौधरी

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक,
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई–२५

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : लीना माणकीकर
चित्रांकन : राजेश लवळेकर, महेश किरडवकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री संदीप आजगांवकर, निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2020–21/
मुद्रक : M/s

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

बच्चों का 'नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षाधिकार अधिनियम २००९ और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप–२००५' को दृष्टिगत रखते हुए राज्य की 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या–२०१२' तैयार की गई । इस पाठ्यचर्या पर आधारित हिंदी द्‌वितीय भाषा (संपूर्ण) 'सुलभभारती' की पाठ्यपुस्तक, मंडळ प्रकाशित कर रहा है । छठी कक्षा की यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें विशेष आनंद हो रहा है ।

हिंदीतर विद्‌यालयों में छठी कक्षा हिंदी शिक्षा का द्‌वितीय सोपान है । छठी कक्षा के विद्‌यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया सहज–सरल बनाने के लिए इस बात का ध्यान रखा गया है कि यह पुस्तक चित्ताकर्षक, चित्रमय, कृतिप्रधान और बालस्नेही हो । प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न चरणों में विद्‌यार्थी निश्चित रूप से किन क्षमताओं को प्राप्त करे; यह अध्ययन–अध्यापन करते समय स्पष्ट होना चाहिए । इसके लिए प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के प्रारंभ में हिंदी भाषा विषय की अपेक्षित अध्ययन निष्पत्ति का पृष्ठ दिया गया है । इन का अनुसरण करते हुए पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट पाठ्यांशों की नाविन्यपूर्ण प्रस्तुति की गई है ।

विद्‌यार्थियों की अभिरुचि को ध्यान में रखकर हिंदी भाषा शिक्षा मनोरंजक एवं आनंददायी बनाने के लिए योग्य बालगीत, कविता, चित्रकथा और रंगीन चित्रों का समावेश किया गया है । भाषाई दृष्टि से पाठ्यपुस्तक और अन्य विषयों के बीच सहसंबंध स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है । इन घटकों के अध्यापन के समय विद्‌यार्थियों के लिए अध्ययन–अनुभव के नियोजन में शालाबाह्‌य जगत एवं दैनिक व्यवहार से जुड़ी बातों को जोड़ने का प्रयास किया गया है । व्याकरण को भाषा अध्ययन के रूप में दिया गया है ।

पाठ्यपुस्तक को सहजता से कठिन की ओर तथा ज्ञात से अज्ञात की ओर अत्यंत सरलता पूर्वक ले जाने का पूर्ण प्रयास किया गया है । शिक्षक एवं अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए सूचनाएँ 'दो शब्द' तथा प्रत्येक पृष्ठ पर 'अध्यापन संकेत' के अंतर्गत दी गई हैं । यह अपेक्षा की गई है कि शिक्षक तथा अभिभावक इन सूचनाओं के अनुरूप विद्‌यार्थियों से कृतियाँ करवाकर उन्हें योग्य शैली में अग्रसर होने तथा शिक्षा ग्रहण करने में सहायक सिद्‌ध होंगे । 'दो शब्द' तथा 'अध्यापन संकेत' की ये सूचनाएँ अध्ययन–अध्यापन की प्रकिया में निश्चित उपयोगी होंगी ।

हिंदी भाषा समिति, भाषा अभ्यासगट और चित्रकारों के निष्ठापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है । पुस्तक को दोषरहित एवं स्तरीय बनाने के लिए राज्य के विविध भागों से आमंत्रित शिक्षकों, विशेषज्ञों द्‌वारा पुस्तक का समीक्षण कराया गया है । समीक्षकों की सूचना और अभिप्रायों को दृष्टि में रखकर हिंदी भाषा समिति ने पुस्तक को अंतिम रूप दिया है । 'मंडळ' हिंदी भाषा समिति, अभ्यासगट, समीक्षकों, चित्रकारों के प्रति हृदय से आभारी है । आशा है कि विद्‌यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

(चं. रा. बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे–०४

पुणे
दिनांक :– ८ अप्रैल २०१६
भारतीय सौर : १९ चैत्र १९३८

* अनुक्रमणिका *

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
*	मेला	१
१.	सैर	२,३
२.	बसंती हवा	४-६
३.	उपहार	७-१०
४.	जोकर	११,१२
५.	(अ)आओ, आयु बताना सीखो	१३
	(ब) महाराष्ट्र की बेटी	
६.	मेरा अहोभाग्य	१४-१७
७.	नदी कंधे पर	१८
८.	जन्मदिन	१९-२२
९.	सोई मेरी छौना रे !	२३-२५
*	स्वयं अध्ययन-१	२६
*	पुनरावर्तन -१	२७

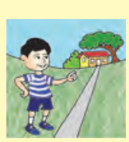

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	उपयोग हमारे	२८,२९
२.	तूफानों से क्या डरना	३०-३२
३.	कठपुतली	३३-३६
४.	सोना और लोहा	३७-३९
५.	(अ) क्या तुम जानते हो ?	४०
	(ब) पहेलियाँ	
६.	स्वास्थ्य संपदा	४१-४४
७.	कागज की थैली	४५
८.	टीटू और चिंकी	४६-४९
९.	वह देश कौन-सा है ?	५०-५२
*	स्वयं अध्ययन-२	५३
*	पुनरावर्तन - २	५४

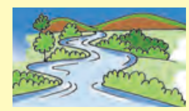

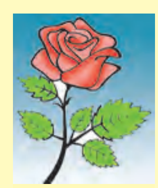

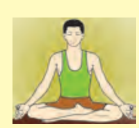

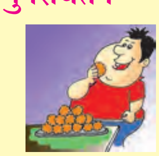

● पहचानो और बताओ :

❋ मेला

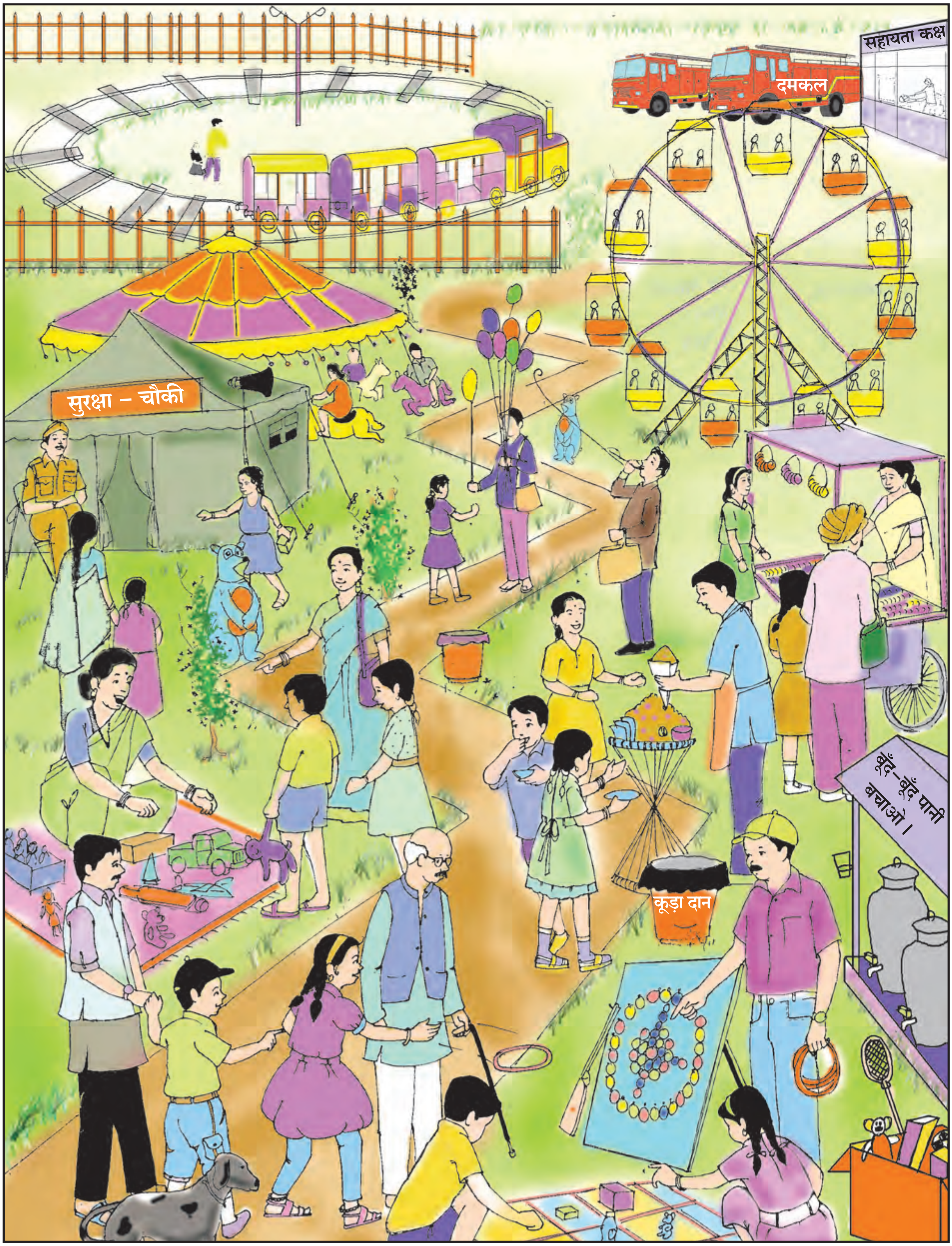

❑ **अध्यापन संकेत** : विद्‌यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराकर प्रश्न पूछें । उनसे मेले का पूर्वानुभव कहलवाएँ तथा दिए गए वाक्य को समझाएँ । परिचित फेरीवाला, सब्जीवाली आदि व्यवसायियों के सुख–दुख को समझकर उनसे बातचीत करने के लिए प्रेरित करें ।

● देखो, समझो और बताओ :

१. सैर

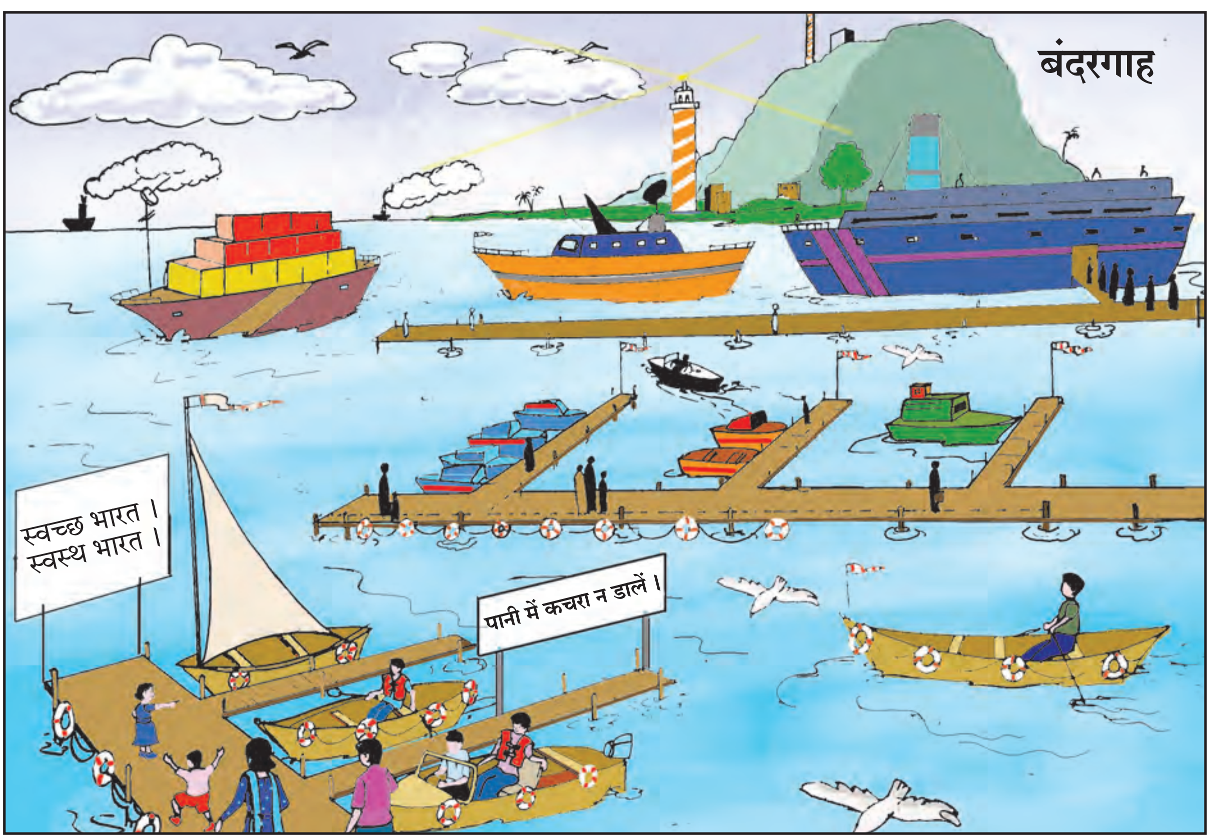

❑ चित्रों में क्या-क्या दिखाई दे रहा है, उनपर चर्चा करें । विद्यार्थियों से अपनी यात्रा का कोई प्रसंग सुनाने के लिए कहें । उनसे आवागमन के साधनों का जल, थल, वायु मार्ग के अनुसार वर्गीकरण कराकर चित्रों सहित विस्तृत जानकारी का संग्रह कराएँ ।

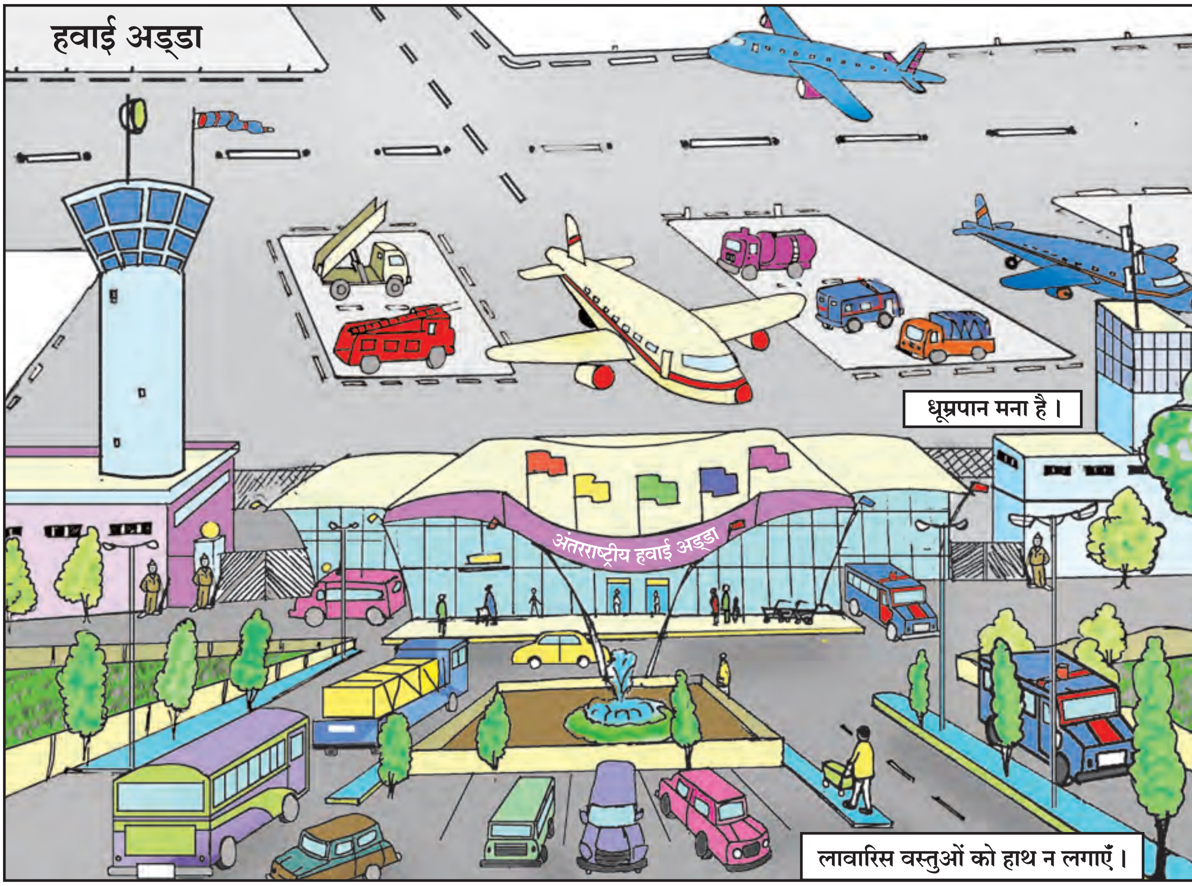

❑ विद्‌यार्थियों से आवागमन के साधनों का महत्त्व कहलवाएँ । दिए गए वाक्यों को समझाकर उनसे इसी प्रकार के अन्य वाक्यों का संग्रह कराएँ । सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता पर उनसे चर्चा करें । यात्रा में महिलाओं एवं वृद्‌धों की सहायता के लिए प्रेरित करें ।

● सुनो और गाओ :

२. बसंती हवा

– केदारनाथ अग्रवाल

जन्म : १ अप्रैल १९११, **मृत्यु :** २२ जून २००० **रचनाएँ :** 'देश-देश की कविताएँ', 'अपूर्वा', 'आग का आईना', 'पंख और पतवार', 'पुष्पदीप' आदि। **परिचय :** आप छायावादी युग के प्रगतिशील कवि माने जाते हैं।

प्रस्तुत कविता 'बसंती हवा' में मस्ती भरे शब्दों द्वारा हवा की अठखेलियों का विवरण दिया है।

स्वयं अध्ययन

(१) नीचे दिए गए चित्रों की सहायता से प्राकृतिक सुंदरता दर्शाने वाला एक चित्र बनाकर उसमें रंग भरो।
(२) अपने चित्र के बारे में बोलो।

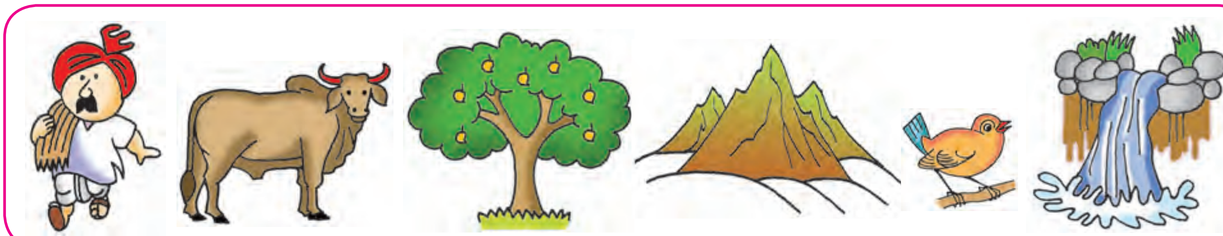

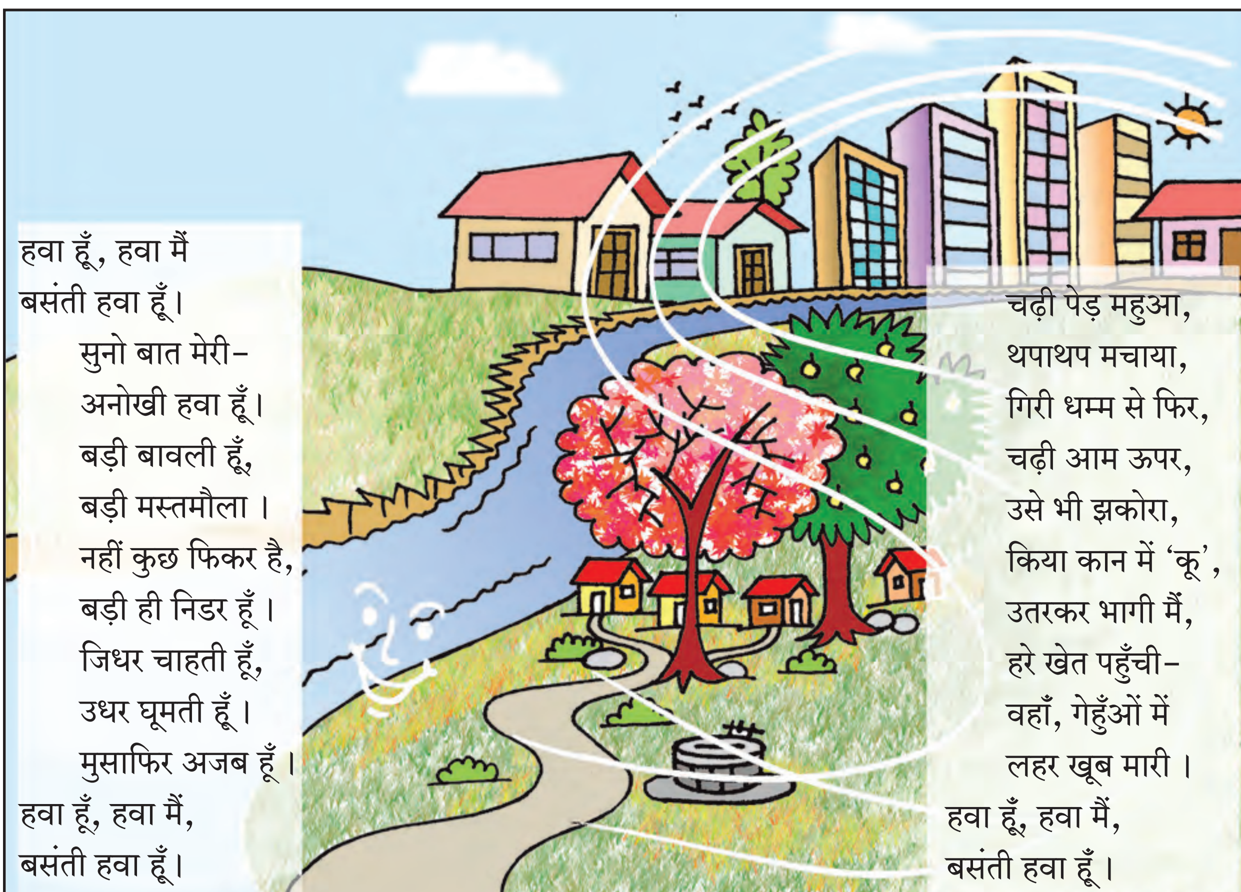

हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ।
सुनो बात मेरी–
अनोखी हवा हूँ।
बड़ी बावली हूँ,
बड़ी मस्तमौला।
नहीं कुछ फिकर है,
बड़ी ही निडर हूँ।
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ।
मुसाफिर अजब हूँ।
हवा हूँ, हवा मैं,
बसंती हवा हूँ।

चढ़ी पेड़ महुआ,
थपाथप मचाया,
गिरी धम्म से फिर,
चढ़ी आम ऊपर,
उसे भी झकोरा,
किया कान में 'कू',
उतरकर भागी मैं,
हरे खेत पहुँची–
वहाँ, गेहुँओं में
लहर खूब मारी।
हवा हूँ, हवा मैं,
बसंती हवा हूँ।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता पाठ करें। विद्यार्थियों से व्यक्तिगत, गुट में सस्वर पाठ कराएँ। प्रकृति की अप्रतिम सुंदरता का वर्णन करते हुए इसे बनाए रखने के लिए उपाय पूछें। हवा की आवश्यकता, महत्त्व बताते हुए उसके कार्य पर चर्चा करें।

जरा सोचो .... बताओ

यदि प्रकृति में सुंदर - सुंदर रंग नहीं होते तो ....

पहर दो पहर क्या,
अनेकों पहर तक
इसी में रही मैं !
खड़ी देख अलसी
लिए शीश कलसी
मुझे खूब सुझी-
हिलाया-झुलाया
गिरी पर न कलसी !
इसी हार को पा,
हिलाई न सरसों,
झुलाई न सरसों,
हवा हूँ, हवा मैं,
बसंती हवा हूँ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

बावली = सीधी-सी, अपनी धुन में
मस्तमौला = मनमौजी
फिकर = चिंता
महुआ = एक प्रकार का वृक्ष
झकोरा = झोंका
पहर = प्रहर
अलसी, सरसों = तिलहन के प्रकार
कलसी = गगरी

भाषा की ओर

दिए गए शब्दों के लययुक्त शब्द लिखो ।

हवा - ....
बावली - ....
सरसों - बरसों
अलसी - ....
महुआ - ....

❑ प्राकृतिक आपदाओं (भूकंप, बाढ़, अकाल आदि) से बचाव के उपाय बताएँ और विद्यार्थियों से कहलवाएँ। अन्य कविता सुनाएँ, दोहरवाएँ, इसमें सभी को सहभागी करें। प्रकृति के संतुलन एवं संवर्धन संबंधी जानकारी दें, प्रत्येक के सहयोग पर चर्चा करें।

❑ **कृति/प्रश्न हेतु अध्यापन संकेत -** प्रत्येक कृति/प्रश्न को शीर्षक के साथ दिया गया है। दिए गए प्रत्येक कृति/प्रश्न के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध करें। क्षमताओं और कौशलों के आधार पर इन्हें विद्यार्थियों से हल करवाएँ। आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए अन्य शिक्षकों की भी सहायता प्राप्त करें। 'दो शब्द' में दी गई सूचनाओं का पालन करें।

खोजबीन

ऋतुओं के नाम बताते हुए उनके परिवर्तन की जानकारी प्राप्त करो और लिखो ।

सुनो तो जरा

त्योहार संबंधी कोई एक गीत सुनो और दोहराओ ।

बताओ तो सही

'शालेय स्वच्छता अभियान' में तुम्हारा सहयोग बताओ ।

वाचन जगत से

कविवर सुमित्रानंदन पंत की कविता का मुखर वाचन करो ।

मेरी कलम से

सप्ताह में एक दिन किसी कविता का सुलेखन करो ।

* रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

१. नहीं कुछ .... है ।

२. गिरी .... से फिर, चढ़ी आम ऊपर ।

३. वहाँ, ... में, लहर खूब मारी ।

४. हिलाया-झुलाया गिरी पर न .... ।

सदैव ध्यान में रखो

प्लास्टिक, थर्माकोल आदि प्रदूषण बढ़ाने वाले घटकों का उपयोग हानिकारक है ।

विचार मंथन

।। हवा प्रकृति का उपहार, यही है जीवन का आधार ।।

अध्ययन कौशल

वायुमंडलीय स्तर दर्शाने वाली आकृति बनाओ ।

* दर्पण में देखकर पढ़ो ।

KJ3SPG

पहचानो हमें

● **सुनो और दोहराओ :**

३. उपहार

प्रस्तुत कहानी में बताया गया है कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए रुचि और लगन आवश्यक है ।

⁂ **चित्र पहचानकर उनके नाम लिखो :** **नाम हमारे**

....

एक गाँव में ऋत्विक नाम का लड़का रहता था । वह बहुत गरीब था । गाँव के पास 'पुस्तक मेला' लगा था । उसने माँ से कहा, ''मैं भी मेला देखने जाऊँगा ।'' उसकी माँ बोली, ''देखो, घर में कोई बड़ा नहीं है, तुम अकेले कैसे जाओगे इतनी दूर? बेटा, मेला देखने की जिद छोड़ दो । चलो दूध पी लो ।'' अपनी माँ की बात सुनकर ऋत्विक उदास हो गया और एक पेड़ के नीचे जा बैठा ।

अचानक उसकी दृष्टि दूर पेड़ों के पीछे गई, जहाँ बहुत तेज रोशनी थी । वह उठकर वहाँ गया । वहाँ सुनहरे पंखों वाली एक परी खड़ी थी । ऋत्विक ने हैरान होकर उस परी से पूछा, ''तुम कौन हो ?'' वह बोली, ''मैं परी हूँ लेकिन तुम यहाँ उदास क्यों बैठे हो ?''

परी का प्रश्न सुनकर ऋत्विक की आँखों में आँसू आ गए । वह बोला, ''मैं अपने दोस्तों के साथ पुस्तक मेला देखना और पुस्तकें खरीदना चाहता हूँ । '' यह कहकर ऋत्विक खामोश हो गया । तब परी बोली, ''इसमें दुख की क्या बात है ? यह समझ लो, तुम्हारी मदद करने के लिए ही मैं आई हूँ । ऐसा मैं तभी करूँगी, जब तुम मेरी परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे ।''

''कौन-सी परीक्षा है ?'' ऋत्विक ने पूछा । परी ने कहा, ''बता दिया तो परीक्षा कैसी ?''

❑ कहानी में आए संज्ञा शब्दों (परी, ऋत्विक, ढ़ेर, ईमानदारी, दूध) को श्यामपट्ट पर लिखें । संज्ञा के भेदों को सरल प्रयोगों द्वारा समझाएँ । उपरोक्त कृति करवाने के पश्चात विद्यार्थियों से इस प्रकार के अन्य शब्द कहलवाएँ । उनसे दृढ़ीकरण भी कराएँ ।

''ठीक है,'' ऐसा कहकर ऋत्विक वहाँ से चला गया । अभी वह कुछ दूर ही गया था कि उसे रास्ते में गिरी हुई एक पोटली मिली । ऋत्विक को यह विश्वास हो गया कि लाल रंग की इस मखमली पोटली में कोई कीमती चीज होगी । उसने उसे खोलना चाहा फिर सोचने लगा । जब यह मेरी नहीं है तो इसे खोलने का मुझे हक नहीं है । ऋत्विक ने पोटली नहीं खोली । तभी किसी की आवाज उसके कानों में पड़ी । ''बेटा, मेरी पोटली गिर गई है, रास्ते में । क्या तुमने देखी है ?''

ऋत्विक ने पूछा, ''किस रंग की थी ?'' ''लाल रंग की,'' राहगीर ने बताया । ''और कोई पहचान बताओ ।'' ऋत्विक ने राहगीर से कहा । ''उसपर एक परी का सुनहरे रंग में चित्र बना है ।'' राहगीर का जवाब था । ऋत्विक ने अपनी थैली से जब वह पोटली निकाली तो उसपर छपा परी का चित्र चमकने लगा । ऋत्विक ने वह पोटली राहगीर को दे दी ।

सुबह उठकर वह वहीं पहुँचा, जहाँ उसे परी मिली थी । देखा तो वहाँ कोई नहीं था । वह बैठ गया। उसकी आँखों के सामने वही लाल रंग की पोटली दिखाई देने लगी । तभी तेज प्रकाश फैला । सामने परी खड़ी थी । परी के दोनों हाथ पीछे थे । परी ने पूछा, '' कैसे हो ?'' ''ठीक हूँ !'' ऋत्विक ने जवाब दिया । तभी परी ने कहा, ''अपनी आँखें बंद करो ! मैं तुम्हें इनाम दूँगी ।'' ''किस बात का ?'' ऋत्विक ने पूछा ।

''तुम उत्तीर्ण हो गए इसलिए ।'' परी बोली ।

परी की बात ऋत्विक की समझ में नहीं आ रही थी । उसने आँखें बंद कर लीं । परी ने उसके हाथों में एक मखमली थैली पकड़ा दी । ऋत्विक ने देखा तो हैरान रह गया । यह तो वही पोटली थी, जो उसने राहगीर को दी थी । परी ने कहा, ''कल मैंने ही तुम्हारी ईमानदारी की परीक्षा ली थी । वह राहगीर भी मैं ही थी इसलिए मैं तुम्हें यह इनाम दे रही हूँ ।''

परी ने ऋत्विक को समझाया, ''ईमानदार व्यक्ति के जीवन में किसी वस्तु की कमी नहीं होती। जाओ ! अब तुम्हें मनचाही वस्तु मिलेगी ।''

ऋत्विक के पास शब्द नहीं थे जिनसे वह परी को धन्यवाद देता । खुशी से उसकी आँखें भर आईं ।

लाल मखमली पोटली ऋत्विक ने अपनी माँ को दी । उसकी समझ में यह नहीं आया कि उसका बेटा उसे क्या दे रहा है । जब माँ वह पोटली खोलने लगी तब

❑ विद्यार्थियों को प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहानी सुनाएँ । उनसे कहानी का मुखर वाचन करवाकर नए शब्दों का अनुलेखन करवाएँ। उन्हें वाचन की आवश्यकता, महत्त्व बताएँ । अपने विद्यालय और परिसर के वाचनालय की जानकारी प्राप्त करने के लिए कहें ।

खोजबीन

गृह उद्‌योगों की जानकारी प्राप्त करो और इसपर चर्चा करो ।

पोटली कई गुना बड़ी हो गई । उसमें से सुंदर-सुंदर पुस्तकें बाहर निकल आईं । पुस्तकों का ढेर देखकर माँ चकित रह गई । माँ के पूछने पर ऋत्विक ने सब कुछ बता दिया ।

अब ऋत्विक ने मित्रों के लिए अपनी बहन कृतिका की सहायता से पुस्तकालय खोला । वहाँ सभी बच्चे आकर अपनी मनपसंद पुस्तकें पढ़ने लगे । उनको पूरा गाँव 'पुस्तक मित्र' के नाम से जानने लगा ।

ऋत्विक ने पुस्तकालय को ही अपने जीवन का ध्येय बना लिया । उसका सारा समय पुस्तकों के बीच

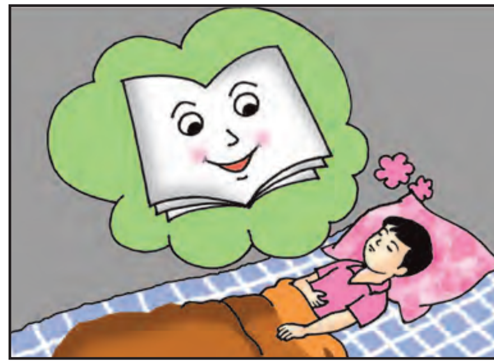

बीतने लगा । एक दिन पुस्तक पढ़ते-पढ़ते ऋत्विक की आँख लग गई । देखता क्या है कि पुस्तकें उससे बातें करने लगीं । उससे एक पुस्तक ने पूछा, ''ऋत्विक, अगर तुम अपने जीवन में बड़े आदमी बनोगे तो क्या तुम हमारा साथ छोड़ दोगे ? हमें भूल जाओगे?'' ऋत्विक ने कहा, ''नहीं-नहीं, अब तो तुम ही मेरी साथी हो, मित्र हो ।'' तभी किसी ने दरवाजे की घंटी बजाई और उसकी नींद टूटी । जागने पर देर तक सोचता रहा कि आगे चलकर वह बड़ा-सा पुस्तक भंडार खोलेगा ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

तेज = प्रखर — हैरान = चकित

पोटली = छोटी थैली — राहगीर = पथिक

मुहावरे

आँखें भर आना = दुखी होना

तय करना = निश्चय करना

चकित होना = आश्चर्य करना

आँख लगना = नींद आ जाना

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द इस कहानी से ढूँढ़कर बताओ ।

सखा

वृक्ष

जननी

नयन

भगिनी

सुनो तो जरा

कार्टून कथा सुनकर उसे हाव-भाव सहित सुनाओ ।

बताओ तो सही

बड़े होकर क्या बनना चाहते हो ?

वाचन जगत से

महादेवी वर्मा का कोई रेखाचित्र पढ़कर उसके पात्रों के नाम लिखो ।

मेरी कलम से

इस कहानी के किसी एक अनुच्छेद का अनुलेखन करो ।

* किसने किससे कहा है, बताओ :

१. ''तुम यहाँ उदास क्यों बैठे हो ?''
२. ''मेरी पोटली गिर गई है रास्ते में।''
३. ''और कोई पहचान बताओ ।''
४. ''नहीं-नहीं, अब तो तुम ही मेरी साथी हो, मित्र हो ।''

सदैव ध्यान में रखो

सच्चाई में ही सफलता निहित है ।

जरा सोचो .... बताओ

यदि तुम्हें परी मिल जाए तो .....

अध्ययन कौशल

किसी परिचित अन्य कहानी लेखन के लिए मुद्दे तैयार करो ।

KJCNR4

स्वयं अध्ययन

दिए गए चित्रों के आधार पर उचित और आकर्षक विज्ञापन तैयार करो ।

● **पढ़ो, समझो और लिखो :**

४. जोकर

प्रस्तुत पाठ में मुहावरों और कहावतों के द्वारा अपनी बात को कम-से-कम शब्दों में व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया गया है ।

अध्ययन कौशल

✲ **किन्हीं पाँच मुहावरों / कहावतों के सांकेतिक चित्र बनाओ : जैसे–**

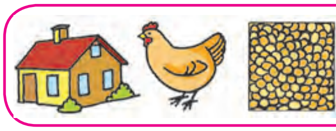 = घर की मुर्गी दाल बराबर। १ + २ = ११ = नौ दो ग्यारह होना।

१. जोकर अपनी **जान पर खेलकर** कलाबाजियाँ दिखाता है ।

२. जोकर झूठ-मूठ का **ठहाका लगाकर** लोगों को हँसाता है ।

३. उचित प्रतिसाद न मिलने पर जोकर **मन मसोसकर रह गया ।**

४. खेल समाप्त होने पर कुछ बच्चों द्वारा जोकर को धन्यवाद कहने पर वह **फूला नहीं समाया ।**

५. एक बच्चे को अपनी नकल करते देखकर जोकर **दंग रह गया।**

६. जोकर शोर मचाने वाले बच्चों को **आँखें दिखा रहा था ।**

७. मौका मिलने पर जोकर कलाकारों के करतबों का श्रेय लेता है अर्थात **गंगा गए गंगादास, जमना गए जमनादास ।**

८. गाना तो आता नहीं और जोकर कहता है गला खराब है यह तो ऐसा ही हुआ, **नाच न जाने, आँगन टेढ़ा ।**

❑ पाठ में आए मुहावरों एवं कहावतों पर विद्यार्थियों से चर्चा करें । इनके अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कराएँ । उनसे जोकर की वेशभूषा में अभिनय कराएँ । जीवन में स्वास्थ्य की दृष्टि से हास्य की आवश्यकता समझाएँ और सदा प्रसन्न रहने के लिए कहें ।

मैंने समझा

KJLJSR

शब्द वाटिका

मुहावरे

जान पर खेलना = प्राणों की परवाह न करना

ठहाका लगाना = जोर से हँसना

मन मसोसकर रह जाना = कुछ न कर पाना

फूला न समाना = अत्यधिक खुश होना

दंग रहना = आश्चर्य चकित होना

आँखें दिखाना= गुस्सा होना

कहावतें

गंगा गए गंगादास, जमना गए जमनादास = अवसरवादी

नाच न जाने, आँगन टेढ़ा = अपना दोष छिपाने के लिए औरों में कमी बताना ।

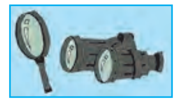

खोजबीन

निम्नलिखित शब्द को लेकर चार मुहावरे लिखो ।

१.________ हाथ २.________

३.________ ४.________

स्वयं अध्ययन

'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत' पर आधारित कोई कहानी सुनाओ ।

जरा सोचो .... बताओ

यदि साइकिल तुमसे बोलने लगी तो ......

विचार मंथन

।। गागर में सागर भरना ।।

सदैव ध्यान में रखो

हमें सदैव प्रसन्न रहना चाहिए ।

समझो हमें

※ चित्र की सहायता से बारहखड़ी के शब्द बनाकर लिखो ।

अनु.	चित्र का पहला अक्षर	वर्ण	चित्र का अंतिम अक्षर	शब्द	अनु.	चित्र का पहला अक्षर	वर्ण	चित्र का अंतिम अक्षर	शब्द
१.		ल		कलम	७.		-		....
२.		-		....	८.		क		....
३.		सा		....	९.		ला		....
४.		म		....	१०.	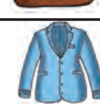	य		....
५.		टी		....	११.		शि		....
६.		क		....	१२.		ग		....

● आकलन :

५.(अ) आओ, आयु बताना सीखो

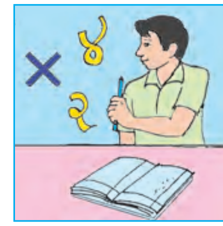

(१) अपने मित्र को उसकी वर्तमान आयु में अगले वर्ष की आयु जोड़ने के लिए कहें । (२) उसे इस योगफल को ५ से गुणा करने के लिए कहें । (३) प्राप्त गुणनफल में उसे अपने जन्मवर्ष का इकाई अंक जोड़ने के लिए कहें । (४) प्राप्त योगफल में से ५ घटा दें । (५) घटाने के बाद जो संख्या प्राप्त होगी, उसकी बाईं ओर के दो अंक तुम्हारे मित्र की आयु है । इस सूत्र को उदाहरण से समझते हैं ।

मान लो, तुम्हारे मित्र की आयु १० वर्ष और जन्म वर्ष २००४ है तो–

(१) १० (वर्तमान आयु) + (अगले ११ वर्ष की आयु) = २१ (२) २१ × ५ = १०५

(३) १०५ + ४ = १०९ (४) १०९ – ५ = १०४

१०४ की बाईं ओर के दो अंक अर्थात १० वर्ष तुम्हारे मित्र की आयु है । इसी आधार पर अपने परिजनों, परिचितों, अन्य मित्रों को उनकी आयु बताकर आश्चर्य चकित कर सकते हो । प्रत्यक्ष करके देखो ।

❑ विद्‍यार्थियों की जोड़ियाँ बनाकर आयु बताने का खेल खेलवाएँ और उन्हें मजेदार पहेलियाँ बूझने के लिए दें । उन्हें इसी प्रकार के अन्य विषयों के भी खेल खेलने के लिए कहें । उनसे पहेलियों और खेलों का चित्रों सहित लिखित संग्रह करवाएँ और खेलवाएँ ।

● अंतर बताओ :

(ब) महाराष्ट्र की बेटी

KJVFUE

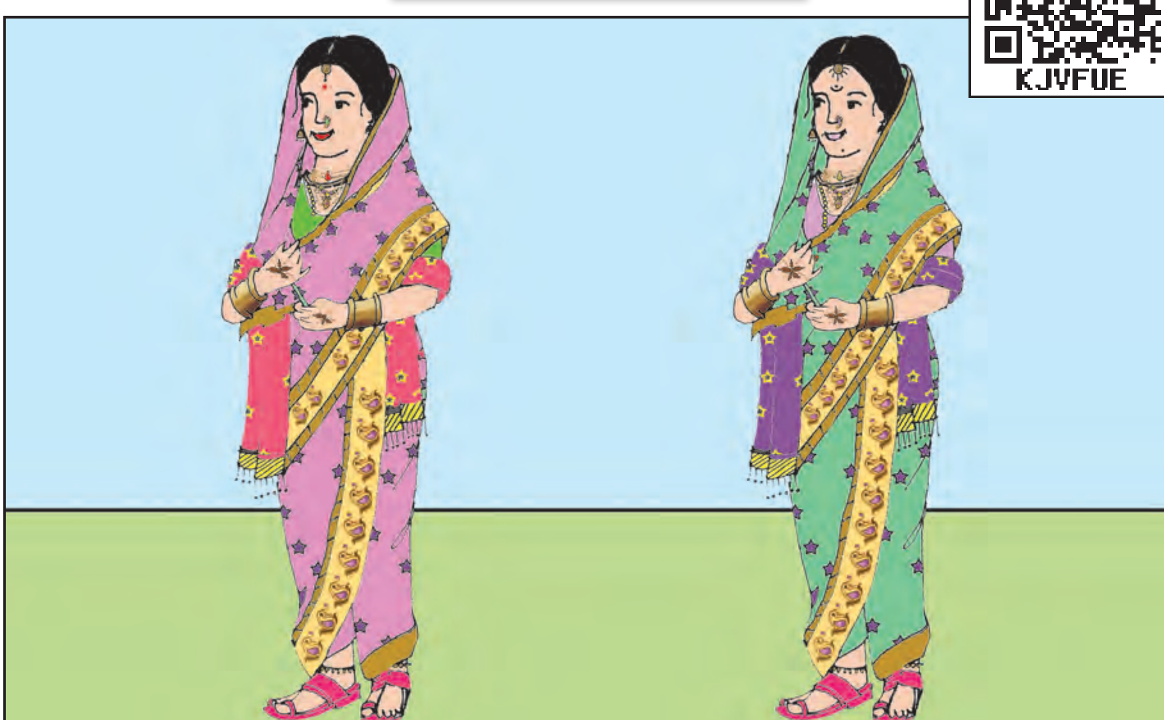

❑ विद्‍यार्थियों से दोनों चित्रों को देखकर उनमें अंतर ढूँढ़कर बताने के लिए कहें । भारत के विभिन्न राज्यों के खानपान, पहनावा, आभूषण जैसे अन्य विषयों पर चर्चा कराएँ । उनमें समानता और विविधता बताते हुए लोगों के आपसी संबंधों को स्पष्ट करें ।

● **सुनो और समझो :**

६. मेरा अहोभाग्य

– चंद्रगुप्त विद्यालंकार

जन्म : १९०६ **रचनाएँ :** 'संदेह', 'मेरा बचपन', 'न्याय की रात', 'मेरा मास्टर साहेब', 'चंद्रकला', 'पगली', 'तीन दिन', 'भय का राज्य', 'देव और मानव' आदि । **परिचय :** आपने साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है ।

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर जी से हुई भेंट से संबंधित संस्मरण बताया है ।

नाम तुम्हारे

✻ चित्र देखकर उचित सर्वनाम ◯ में लिखो : (तू, मैं, वह, यह, क्या, जैसा-वैसा, अपने-आप)

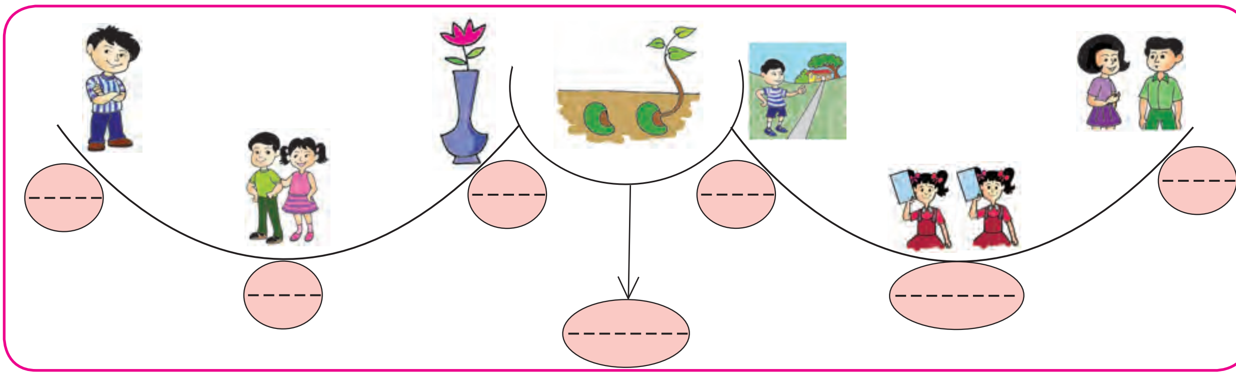

फरवरी १९३६ में मुझे शांति निकेतन जाना था। वहाँ एक साहित्यिक कार्यक्रम होने वाला था । मैं बहुत ही उल्लसित था क्योंकि उस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वयं गुरुदेव रवींद्रनाथ जी करने वाले थे ।

निश्चित दिन कोलकाता से हम बहुत सारे लोग शांति निकेतन के लिए रवाना हुए । लगभग एक दर्जन हिंदीवालों का यह दल शांति निकेतन के सुंदर अतिथि-भवन में ठहराया गया । यह अतिथि भवन अशोक वृक्षों के सघन उपवन के बीचोबीच बनाया गया था । बहुत ही सुंदर, बड़ी और अच्छी इमारत थी वह ! जैसा सोचा था वैसा ही पाया । ऊपर की मंजिल के एक कमरे में हमें ठहराया गया । कमरे के बाहर एक विस्तृत बरामदा था । बरामदे में खड़े होकर अगर बाहर देखा जाए तो सामने ही सघन बकुल वृक्ष दिखाई देते थे ।

दूसरे दिन प्रात:काल ही हमें बताया गया कि गुरुदेव का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, अत: कार्यक्रम की बैठक में वे नहीं आ पाएँगे । मैं बहुत निराश हो गया तथापि हमें जब यह मालूम पड़ा कि उनके डॉक्टर ने हम लोगों को केवल पंद्रह मिनटों का समय दिया है, जिसमें गुरुदेव के दर्शन तथा उनके साथ संक्षिप्त वार्तालाप भी हो सकता है तब हमारी खुशी का ठिकाना न रहा । हम बेसब्री से उस क्षण का इंतजार करने लगे ।

मध्याह्न के बाद गुरुदेव की भेंट हुई । करीब चार बजे होंगे । गुरुदेव की धारणा थी कि कुछ दो-तीन आदमी ही होंगे । पर जब उन्होंने हम चौदह जनों को

❑ संस्मरण में आए सर्वनाम शब्दों को (मैं, वह, कुछ, जैसा-वैसा, अपने-आप) श्यामपट्ट पर लिखें । इनके भेदों को प्रयोग द्‌वारा समझाएँ और अन्य शब्द कहलाएँ । विद्यार्थियों से कृति करवाने के पश्चात उनका वाक्यों में प्रयोग करवाकर दृढ़ीकरण कराएँ ।

अध्ययन कौशल

पाठ्‌यपुस्तक में आए हुए कठिन शब्दों के अर्थ वर्णक्रमानुसार शब्दकोश में देखो ।

देखा तो मजाक में उन्होंने कहा, ‘‘अब मेरी क्षमता दरबार लगाने की नहीं रही । इस मकान में जगह की भी कमी है ।’’ फिर हम सबको गुरुदेव से परिचय कराया गया । बाद में वार्तालाप शुरू हुआ ।

चर्चा के दौरान गुरुदेव ने कहा, ‘‘अब से पचास बरस पहले जब मैंने कहानियाँ लिखना शुरू किया था तो इस क्षेत्र में एक आध ही आदमी था । मेरी प्रारंभिक कहानियों में ग्रामीण जीवन के संसर्ग का ही वर्णन है । उसके पहले इस तरह की कोई चीज बांग्ला भाषा में नहीं थी । मेरी कहानियों में ग्रामीण जनता की मनोवृत्ति के दर्शन होते थे । उन कहानियों में कुछ ऐसी चीज है जो संसार के किसी भी देश के आदमी को भा सकती है क्योंकि मनुष्य स्वभाव तो दुनिया में हर जगह एक-सा ही है ।’’

गुरुदेव कुछ समय के लिए रुके तभी अपने आप मेरे मुँह से निकल पड़ा, ‘‘गुरुदेव आपके मन में ‘काबुलीवाला’ इस कहानी का विचार कैसे आया ? यह लोकप्रिय कहानी देश के सभी भाषाओं के सभी बच्चों को बहुत ही प्यारी लगती है ।’’

गुरुदेव बोले, ‘‘वह कहानी कल्पना की सृष्टि है । एक काबुलीवाला था, वह हमारे यहाँ आता था और हम सब उससे बहुत परिचित हो गए थे । मैंने सोचा, उसकी भी एक छोटी लड़की होगी और जिसकी वह याद किया करता होगा ।’’

इसी तरह वार्तालाप होता रहा । हम सबके लिए यह एक मानसिक खाद्‌य था । आश्चर्य की बात यह कि पंद्रह मिनट के बजाय चालीस मिनट हो चुके थे। अब गुरुदेव उठे, चल पड़े । जाते-जाते उन्होंने कहा, ‘‘ जब मैं ऐसे किसी वार्तालाप के लिए कम समय देता हूँ तब मेरी वह बात सचमुच ठीक न मानिएगा क्योंकि मुझे स्वयं लोगों से बातचीत करने में आनंद आता है ।’’

हम सबने गुरुदेव को धन्यवाद दिया और विदा ली। मैं अतिथि गृह के मेरे कमरे में वापस आया । गुरुदेव के साथ हुए वार्तालाप से मुझे एक असाधारण उल्लास की अनुभूति हो रही थी । पर जब मुझे पता चला कि जिस कमरे में मुझे ठहराया गया था, उसी कमरे में स्वयं गुरुदेव काफी समय तक रह चुके थे तब

❑ पाठ पढ़कर सुनाएँ और दोहरवाएँ । विद्यार्थियों को अपना कोई संस्मरण सुनाने के लिए कहें । उन्हें नए शब्दों से परिचित कराकर अर्थ समझाएँ और इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कराएँ । उनसे गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर जी की रचनाएँ पूछें और उनपर चर्चा करें ।

जरा सोचो .... बताओ

यदि मैं पुस्तक होता/होती तो ......

तो मेरी खुशियों का ठिकाना न रहा । ओहो ! मुझे तो यह भी बताया गया कि गुरुदेव ने 'गीतांजली' का अधिकांश भाग इसी कमरे के बरामदे में बैठकर लिखा था । मैं सचमुच भाव विभोर हो उठा । क्या यह सच है ? मेरा अहोभाग्य था कि मैं उसी कमरे में ठहरा था जिसमें नोबल पुरस्कार प्राप्त 'गीतांजली' रची गई थी ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

संस्मरण = स्मरणीय घटना
मध्याह्न = दोपहर
उल्लसित = आनंदित
वार्तालाप = बातचीत
दल = समूह
संसर्ग = संगति
सृष्टि = संसार
सघन = घना
अनुभूति = स्व-अनुभव
उपवन = उद्‌यान
बकुल = मौलसिरी (वृक्ष का नाम)
मानसिक खाद्‌य = वैचारिक चर्चा

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों के लिंग और वचन बदलकर लिखो ।

स्त्रीलिंग		पुल्लिंग	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
भैंस	भैंसें	भैंसा	भैंसे
-----	-----	बिलाव	-----
घोड़ी	-----	-----	-----
-----	-----	-----	नाग
-----	चुहियाँ	-----	-----

सुनो तो जरा

दैनिक समाचार सुनो और मुख्य समाचार को फलक पर लिखकर परिपाठ में सुनाओ ।

बताओ तो सही

अपने मनपसंद व्यक्ति का साक्षात्कार लेने हेतु कोई पाँच प्रश्न बनाकर बताओ ।

वाचन जगत से

संत तुकाराम के अभंग पढ़ो और गाओ ।

मेरी कलम से

अपने परिवार से संबंधित कोई संस्मरण लिखो ।

* एक वाक्य में उत्तर लिखो :

१. साहित्यिक कार्यक्रम कहाँ होने वाला था ?

२. गुरुदेव की कहानियों में किसकी मनोवृत्ति के दर्शन होते थे ?

३. संस्मरण में किस कहानी का उल्लेख किया गया है ?

४. लेखक आनंद विभोर क्यों हुए ?

स्वयं अध्ययन

महान विभूतियों की सूची बनाकर उनके कार्यों का उल्लेख करते हुए निबंध लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

उल्लेखनीय कार्य ही व्यक्ति को महान बनाते हैं ।

KK5BH2

विचार मंथन

।। हे विश्वचि माझे घर ।।

खोजबीन

देखें (www.nobel.award)

* नीचे दिए गए नोबल पुरस्कार प्राप्त विभूतियों के चित्र चिपकाओ । उन्हें यह पुरस्कार किसलिए प्राप्त हुआ है, बताओ ।

१. गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर	२. सर चंद्रशेखर वेंकटरमन	३. डॉ. हरगोबिंद खुराना	४. मदर टेरेसा
५. सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर	६. अमर्त्यकुमार सेन	७. वेंकटरमन रामकृष्णन	८. कैलास सत्यार्थी

● गाओ और समझो :

७. नदी कंधे पर

– प्रभुदयाल श्रीवास्तव

जन्म : ४ अगस्त १९४४, धरमपुरा, दमोह (मध्यप्रदेश) **रचनाएँ :** बुंदेली लघुकथाएँ, लोकगीत, दैनिक भास्कर, नवभारत में बालगीत आदि । **परिचय :** आप विगत दो दशकों से कहानी, कविताएँ, व्यंग्य, लघुकथाएँ, गजल आदि लिखते हैं ।

प्रस्तुत कविता में काल्पनिक प्रतीकों के द्‌वारा नदी के प्रति बाल मनोभावों को व्यक्त किया हैं ।

अगर हमारे बस में होता,
नदी उठाकर घर ले आते ।
अपने घर के ठीक सामने,
उसको हम हर रोज बहाते ।
कूद-कूदकर, उछल-उछलकर,
हम मित्रों के साथ नहाते ।

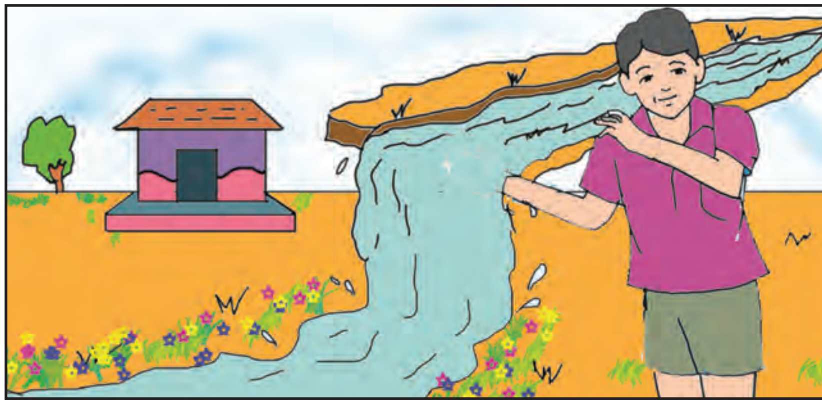

कभी तैरते कभी डूबते,
इतराते गाते मस्ताते ।
नदी आ गई चलो नहाने,
आमंत्रित सबको करवाते ।
सभी उपस्थित भद्र जनों का,
नदिया से परिचय करवाते ।
अगर हमारे मन में आता,
झटपट नदी पार कर जाते ।

खड़े-खड़े उस पार नदी के,
मम्मी-मम्मी हम चिल्लाते ।
शाम ढले फिर नदी उठाकर,
अपने कंधे पर रखवाते ।
लाए जहाँ से थे हम उसको,
जाकर उसे वहीं रख आते ।

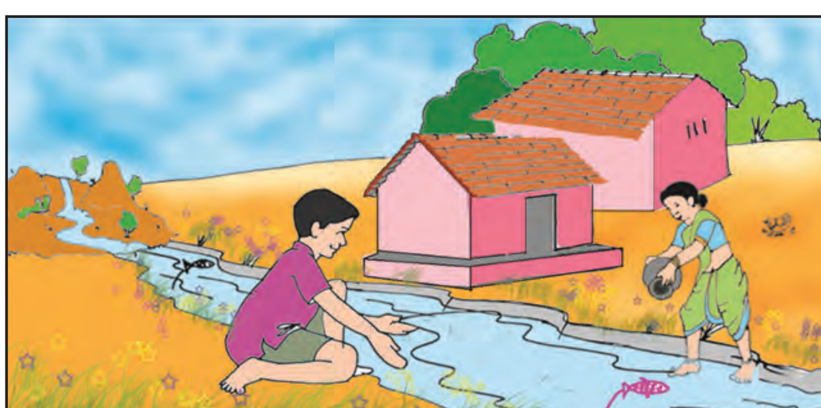

❑ विद्‌यार्थियों से एकल एवं सामूहिक कविता पाठ कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से नदी को अपने कंधों पर ले आने की कल्पना को स्पष्ट करें । उन्हें बाल जगत से संबंधित अन्य किसी कल्पना के प्रति बाल मनोभाव व्यक्त करके प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

८. जन्मदिन

–प्रेमस्वरूप श्रीवास्तव

जन्म : ११ मार्च १९२९, खरौना, जौनपुर (उ.प्र.) **रचनाएँ :** विविध बालकहानियाँ, बालनाटक, लेख, रूपक आदि ।
परिचय : आप पिछले छह दशकों से साहित्य सृजन से संलग्न हैं ।
प्रस्तुत कहानी में पानी के महत्त्व को बताकर उसकी बचत की ओर ध्यान आकर्षित किया है ।

मैं कौन हूँ ?

*** सूचना, निर्देश, आदेश, अनुरोध, विनती के वाक्य विरामचिह्न सहित पढ़ो और समझो :**

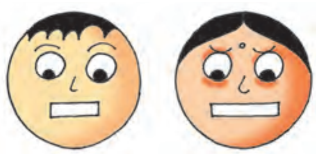

१. बगीचे के फल–फूल तोड़ना मना है ।
२. जैसे – फल, सब्जी लेकर घर आओ ।
३. 'चंदामामा' बालपत्रिका पढ़ो ।
४. अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें ।
५. बच्चों ने कहा, '' कृपया हमें अंतरिक्ष के बारे में बताएँ । ''

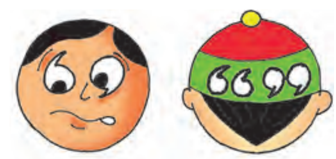

गरमी पड़ने लगी थी । धीरे–धीरे उसके तेवर तीखे हो चले । सूरज आग बरसाने लगा । मगर इन सबसे बेखबर बबलू अपने में ही मस्त था । उसे बाथरूम में घुसे आधा घंटा हो चुका था । शावर के नीचे उसकी धमा–चौकड़ी मची हुई थी । कभी तो वह शावर के साथ नल की टोंटी भी खोल देता । अंत में माँ को ही चिल्लाना पड़ा, ''बबलू, क्यों इस तरह पानी बरबाद कर रहे हो ?'' ''माँ, मैं ऐसा कुछ भी नहीं कर रहा हूँ । मैं तो बस नहा रहा हूँ । इस गरमी में मेरा मन तो करता है कि घंटों नहाता रहूँ । '' बबलू बोला ।

बबलू की इस आदत से उसके माता–पिता दोनों परेशान थे । वह मंजन करते समय देर तक पानी बहाता रहता । स्कूल में भी उसे अपनी इस आदत के कारण डाँट खानी पड़ती । वह वहाँ के नल की टोंटी भी अकसर खुली छोड़ देता ।

एक पानी की ही बात नहीं थी । बिजली के साथ भी यही होता । वह कमरे में न हो तब भी पंखा खुला रहता तो कभी कूलर बंद करना भूल जाता । कभी वह पढ़ते–पढ़ते सो जाता तब भी बल्ब जलता रहता । माँ को ही बुझाना पड़ता ।

पानी हो या बिजली यानी कि ऊर्जा, दोनों का भंडार सीमित है । दुनिया के सभी लोग ऐसा करने लगे तो क्या होगा ! नहाना–वहाना तो दूर, लोग एक घूँट पानी के लिए तरसेंगे ।

❑ 'चलो, मत रुको । चलो मत, रुको ।' इसी प्रकार के अन्य वाक्य श्यामपट्ट पर लिखवाएँ । उनमें विरामचिह्नों का उपयोग करवाएँ । नए विरामचिह्नों (– योजक चिह्न,—निर्देशक चिह्न,' ' इकहरा अवतरण चिह्न ,'' '' दोहरा अवतरण चिह्न) का प्रयोग समझाएँ ।

जरा सोचो .... कार्टून बनाओ

यदि पानी की टोंटी बोलने लगी........

लेकिन यह बात बबलू की समझ में बिलकुल न आती । माँ और पापा दोनों ही उसमें सुधार लाना चाहते थे पर उन्हें कोई उपाय नहीं सूझ रहा था ।

उस दिन शीला मौसी की बेटी पूजा का जन्मदिन था । उन्होंने सबको खाने पर बुलाया था । शाम को सब उनके यहाँ पहुँच गए पर बबलू को वहाँ पसरा सन्नाटा देख बड़ा आश्चर्य हुआ । मेज पर भोजन लगा हुआ था । गुब्बारे और रंगीन झालर भी सजे हुए थे पर कमरे में बिजली की रोशनी नहीं थी । कूलर और पंखा भी नहीं चल रहे थे । केवल दो-एक मोमबत्तियों का धीमा प्रकाश फैला हुआ था । सब गरमी से परेशान नजर आ रहे थे ।

शीला मौसी ने बताया, ''गरमी बढ़ जाने से बाहर तमाम जगहों पर बिजली का भार बढ़ गया है इसलिए कंपनी ने अपने यहाँ भी आज से कटौती शुरू कर दी है। आज कॉलोनी के इस ब्लॉक में कटौती हुई है । फिर बारी-बारी दूसरे ब्लॉकों में कटौती करेंगे, इससे क्या ? हम पूजा का जन्मदिन तो हँसी-खुशी से मनाएँगे ही ।''

फिर पूजा की माँ ने आरती उतारी और मिठाइयाँ बाँटी । 'हैप्पी बर्थ डे' के बोल सभी के मुँह से निकल पड़े । धमा-चौकड़ी के बीच बच्चों ने गुब्बारे फोड़े । सभी गुब्बारे और टॉफियों पर टूट पड़े । कुछ देर के लिए सब गरमी की परेशानी भी भूल गए ।

कुछ देर बाद शीला मौसी बोलीं, ''अच्छा बच्चो, अब धमा-चौकड़ी बंद करो । सबका खाना लग गया है । आओ, जल्दी करो ।'' सब खाने की मेज पर पहुँच गए । इस बीच बबलू को बहुत जोरों से प्यास लग गई। मगर शायद पानी न होने से सभी के गिलास आधे ही भरे हुए थे । बबलू एक घूँट में ही सारा पानी गटक गया पर इससे उसकी प्यास नहीं बुझी । फिर भी वह खाने में जुट गया। दो-चार कौर भीतर जाते ही उसकी प्यास और भड़क उठी । वह प्यास से बैचेन हो उठा । गरमी अलग परेशान कर रही थी । वह पानी-पानी चिल्लाने लगा । लेकिन पानी का जग खाली पड़ा था ।

शीला मौसी मुँह बनाकर बोलीं, ''क्या बताऊँ बेटे, इस ब्लॉक की पानी की टंकी की सफाई हो रही

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ कहानी का वाचन करें और विद्‍यार्थियों से कराएँ । कहानी में आए जीवन मूल्यों पर चर्चा करें । स्वयं के दो गुण और दो दोष बताने के लिए कहें । कहानी के पात्रों के स्वभाव के बारे में उनको बारी-बारी से बताने के लिए प्रेरित करें ।

है । कोई बात नहीं बच्चो, अच्छा-बुरा तो होता ही रहता है तुम लोग खाना खाओ । अड़ोस-पड़ोस में देखते हैं, कहीं-न-कहीं से पानी तो मिल ही जाएगा ।''

लेकिन इस आश्वासन से बबलू को कोई राहत नहीं मिली । प्यास से उसका गला सूखा जा रहा था। खाने का एक कौर भी गले से नीचे नहीं उतर रहा था। वह प्यास से छटपटाने लगा । आज पहली बार प्यास का अनुभव करने से तो उसे पानी मिलने वाला नहीं था।

जैसे आज पानी को तो बबलू से अपनी बरबादी का जी भरकर बदला जो लेना था । अब तो बबलू क्या तमाम बच्चों का धैर्य जवाब देने लगा था ।

तभी एक चमत्कार हो गया । अचानक बिजली आ गई । कूलर-पंखे चलने लगे । कमरा बिजली की रोशनी से जगमगा उठा । सभी बच्चे खुशी से चिल्ला उठे ।

मगर बिजली आने भर से तो प्यास बुझने वाली नहीं थी । अंकल को भी अचानक कुछ याद हो आया । वे खुशी से बोल उठे, '' अरे बच्चो, मैं तो भूल ही गया था कि बड़े वाले पानी के कूलर में पानी भरा हुआ है ।''

अगले ही पल वहाँ का दृश्य बदल गया । कमरा ठंडी हवा से भर उठा । बच्चे-बड़े सब ठंडे पानी के साथ चटपटे भोजन का स्वाद लेने लगे । बबलू की तो बाँछें खिल उठीं । चलने से पहले शीला मौसी और माँ एक-दूसरे को देख कुछ मुसकुराए । इस मुसकुराहट के पीछे छिपा रहस्य बबलू नहीं समझ पाया ।

घर पहुँचने पर माँ को बबलू किसी सोच में डूबा दिखाई पड़ा । बबलू कुछ नहीं बोला । शीला मौसी के यहाँ जो घटना हुई, वह अब भी उसकी आँखों के आगे घूम रही थी । अपने आँगन की गौरैया की प्यास से खुली चोंच । बाहर सड़क की नाली में जीभ निकाले हाँफता हुआ टॉमी । शीला मौसी के यहाँ प्यास से सूखता उसका गला । पंखा-कूलर जरा देर के लिए बंद रहने पर बहता पसीना । बहुत कुछ । नहीं, अब वह ऐसा कुछ भी नहीं करेगा ।

''माँ, कल से मुझे आँगन में किसी बरतन में पानी भरकर रखना है ।'' माँ हँसकर बोली, ''तेरे कारण पानी बरबाद होने से बचे तब न रखें। ''

''माँ, अब पानी की एक बूँद भी बरबाद नहीं होगी,'' बबलू आत्मविश्वास से भरकर बोला ।

मगर बबलू कभी यह नहीं जान पाया कि शीला मौसी के यहाँ जन्मदिन की पार्टी में जो कुछ हुआ, वह एक नाटक मात्र था । उसे सबक सिखाने के लिए । माँ ने चलने से पहले शीला मौसी को फोन पर बबलू की इस आदत के बारे में बता दिया था । शीला मौसी ने भी कुछ करने का भरोसा दिया था । उन्होंने यही नाटक किया जो कि पूरी तरह कामयाब रहा ।

अब तो बबलू खुद भी अपने दोस्तों को समझाता है कि पानी और बिजली अनमोल हैं । इन्हें भविष्य के लिए बचाकर रखो ।

❑ प्रश्नोत्तर के माध्यम से विद्‌यार्थियों से पानी, बिजली आदि का उचित उपयोग कराने हेतु चर्चा करें । उन्हें इनकी बचत करने के लिए प्रोत्साहित करें । दैनिक जीवन में सौर ऊर्जा का महत्व और आवश्यकता समझाकर उसका उपयोग करने के लिए प्रेरित करें ।

मैंने समझा

KKN3ZC

शब्द वाटिका

नए शब्द

बरबाद = नाश
तमाम = सभी
भंडार = खजाना
भरोसा = विश्वास
सन्नाटा = गहन शांति
कामयाब = सफल

मुहावरे

धमा-चौकड़ी मचाना = धूम मचाना

भाषा की ओर

शब्दयुग्मों की जोड़ियाँ मिलाओ।

अड़ोस	वहाना
बारी	खुशी
अच्छा	बारी
नहाना	पड़ोस
हँसी	बुरा

स्वयं अध्ययन

मातृभाषा के दस शब्द एवं दो वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करो।

सुनो तो जरा

ध्वनिफीति, सी. डी. पर कोई लोकगीत सुनो।

बताओ तो सही

तुम अपनी छोटी बहन/छोटे भाई के लिए क्या करते हो ?

वाचन जगत से

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की आत्मकथा का अंश पढ़कर चर्चा करो।

मेरी कलम से

अपने नाना जी/दादा जी को अपने मन की बात लिखकर भेजो।

* दो-तीन वाक्य में उत्तर लिखो :

१. बबलू की आदत से कौन परेशान थे ?
२. शीला मौसी ने बिजली की कटौती का क्या कारण बताया ?
३. प्यास के कारण बबलू की स्थिति कैसी बनी थी ?
४. बबलू ने किस बात को कभी नहीं जाना ?

सदैव ध्यान में रखो

प्राकृतिक संपदाओं की बचत करना आवश्यक है।

अध्ययन कौशल

* निम्नलिखित चित्रों के नाम बताओ और जानकारी लिखो।

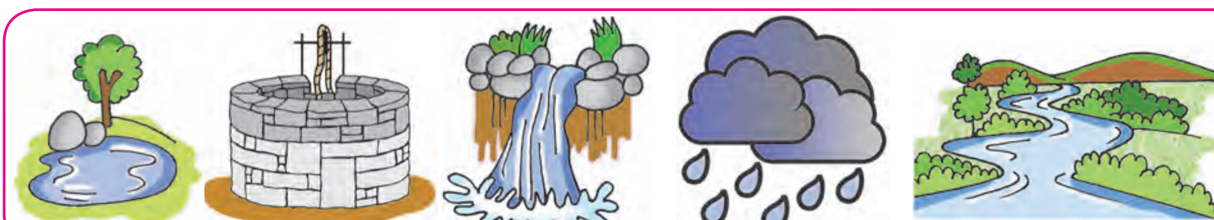

● सुनो, पढ़ो और गाओ :

९. सोई मेरी छौना रे !

– डॉ. श्रीप्रसाद

जन्म : ५ जनवरी १९३२, पारना, आगरा (उ.प्र.) **रचनाएँ :** 'खिड़की से सूरज', 'आ री', 'कोयल', 'गुड़िया की शादी', आदि ।
परिचय : आपने विपुल मात्रा में बाल साहित्य का सृजन किया है ।
प्रस्तुत कविता में लोरी के माध्यम से माँ का वात्सल्य भाव प्रकट किया गया है ।

जरा सोचो .... बताओ

* यदि सच में हमारे मामा का घर चाँद पर होता तो...

मेरा गेंद-खिलौना रे, सोई मेरी छौना रे !

झूला झूले सोने का,
झूले रेशम की डोरी ।
मीठे सपनों में खोई,
सुन-सुन परियों की लोरी ।
मेरा दीठ-दिठौना रे !
सोई मेरी छौना रे !

चाँद-सितारे जाग रहे,
नाच रही है चाँदनिया ।
फूल खिले हैं चाँदी के,
फूली मेरी आँगनिया ।
मेरा दीठ-दिठौना रे !
सोई मेरी छौना रे !

❑ विद्यार्थियों से लोरी गवाएँ और उसका अर्थ पूछें । इसमें आए संदर्भ समझाएँ और उसपर चर्चा करें । माता-पिता जी का महत्व पूछें और उन्हें अपने दादी जी/ नानी जी के गुणों को उजागर करने वाली कोई घटना बताने के लिए कहें । अन्य लोरी सुनाएँ और गवाएँ ।

खोजबीन

विभिन्न क्षेत्रों की 'प्रथम भारतीय महिलाओं' की सचित्र जानकारी कॉपी में चिपकाओ ।

मेरा सुख अनहोना रे,
सोई मेरी छौना रे !
गीत सुनाऊँ सोए तू,
तू सोए औ गाऊँ मैं ।
मेरा दीठ दिठौना रे !
सोई मेरी छौना रे !

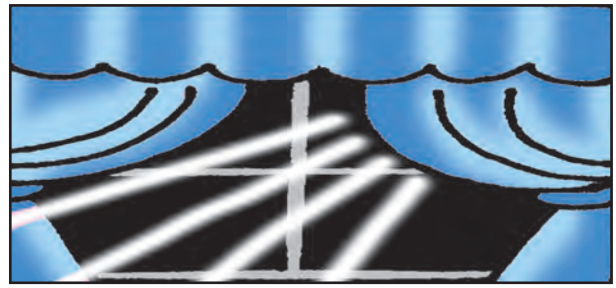

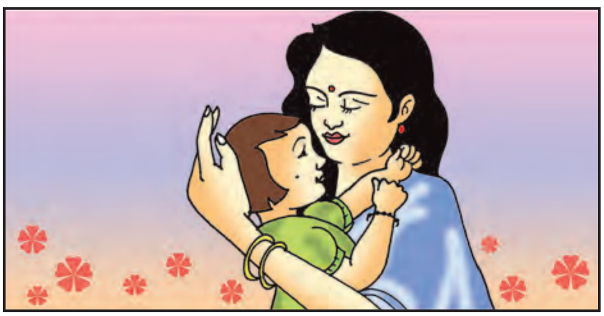

जागे, खेले, रूठे तू,
हँस-हँस तुझे मनाऊँ मैं ।
खिलौनों की दुनिया की
सैर तुझे करवाऊँ मैं ।
मेरी प्यारी सलोनी रे !
सोई मेरी छौना रे !

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
सलोनी = सुंदर
छौना = नन्हा बच्चा

स्वयं अध्ययन

अपने परिवार के प्रिय व्यक्ति के लिए चार काव्य पंक्तियाँ लिखो ।

भाषा की ओर

हिंदी-मराठी के समोच्चारित शब्दों की अर्थ भिन्नता बताओ और लिखो ।

मराठी अर्थ	समोच्चारित शब्द	हिंदी अर्थ
	← कल →	
	← सही →	
	← खोल →	
	← आई →	
	← परत →	

सुनो तो जरा

नीतिपरक दोहे सुनो और आनंदपूर्वक सुनाओ ।

बताओ तो सही

माँ को एक दिन की छुट्‌टी दी जाए तो क्या होगा ?

वाचन जगत से

सुभद्राकुमारी चौहान की कविता पढ़ो और समूह में गाओ ।

मेरी कलम से

नियत विषय पर भाषण तैयार करो ।

* कविता की पंक्तियाँ पूरी करो ।

१. चाँद सितारे ....,
......................................।
......................................,
............................आँगनिया ।

२. मेरा सुख ....,
......................................!
......................................,
.... गाऊँ मैं ।

सदैव ध्यान में रखो

जीवन में माँ का स्थान असाधारण है ।

विचार मंथन

।। जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।

अध्ययन कौशल

अपने परिवार का वंश वृक्ष तैयार करो और रिश्ते-नातों के नाम लिखो ।

KKHZ1Z

जोड़ो हमें

*** पेड़ के पत्तों पर दिए गए वर्णों से संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द बनाओ : (आधे होकर, पाई हटाकर, हल लगाकर, 'र' के प्रकार)**

(क, फ, ग, त, थ, घ, ष, व, द, म, ह, ठ, ड, ट, प, र)

❋ स्वयं अध्ययन–१ ❋

❋ एक से सौ तक की उलटी गिनती पढ़ो और कॉपी में लिखो :

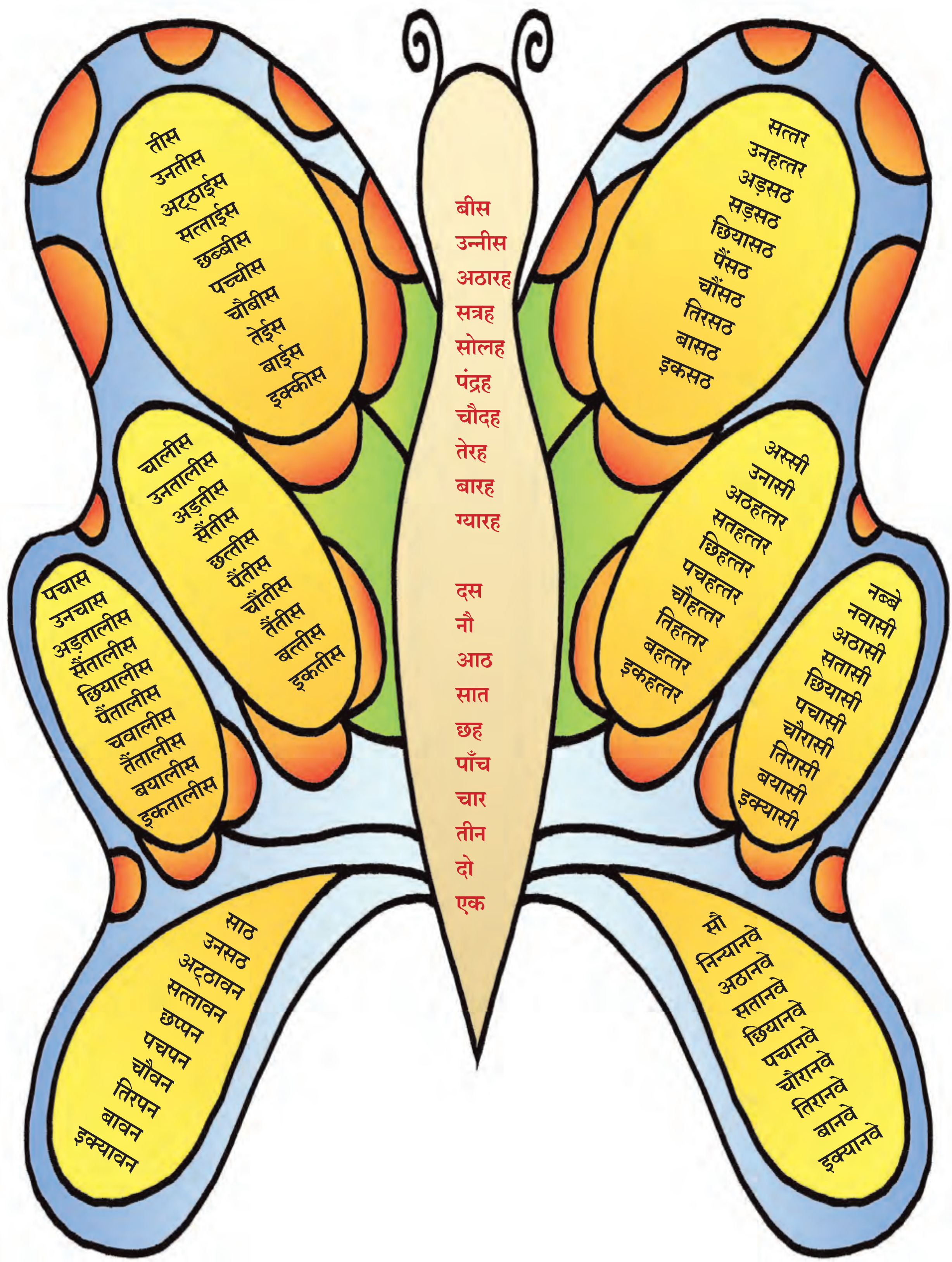

✻ पुनरावर्तन – १ ✻

१. वर्णमाला सुनाओ और विशेष वर्णों के उच्चारण पर ध्यान दो ।

२. विद्‌यालय के स्नेह सम्मेलन का वर्णन करो ।

३. पसंदीदा विषय पर विज्ञापन बनाकर उसको पढ़ो ।

४. फल-फूलों के दस-दस नाम लिखो ।

फलों के नाम	फूलों के नाम
१.	१.
२.	२.
३.	३.
४.	४.
५.	५.
६.	६.
७.	७.
८.	८.
९.	९.
१०.	१०.

५. अक्षर समूह में से खिलाड़ियों के नाम बताओ और लिखो ।

इ	ह	ना	सा	ल	वा	ने		______
ध्या	द	चं	न					______
व	शा	ध	जा	बा	खा			______
ह	ल्खा	सिं	मि					______
म	री	कॉ	मे					______
नि	मि	सा	र्जा	या				______
न	र	स	ल	डु	तें	क	चि	______

कृति/उपक्रम

माता-पिता से अपने बारे में सुनो ।	पिछले वर्ष किए अपने विशेष कार्य बताओ ।	बाल सभा में प्रतिदिन बोध कथा का वाचन करो ।	वर्ष भर के खेल-समाचारों का सचित्र संकलन प्रस्तुत करो ।

● देखो, समझो और चर्चा करो :

१. उपयोग हमारे

डाकघर

❑ विद्‌यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराकर उनको प्रश्न पूछने के लिए कहें । बड़ों की सहायता से उन्हें डाकघर में जाकर टिकट खरीदने तथा बैंक में बाल-बचत खाता खुलवाने और परिचित डाकिए, बैंक कर्मचारी, नर्स, हवलदार से बातचीत करने की सूचना दें ।

बैंक

- उपरोक्त स्थानों की कार्य प्रक्रिया संबंधी जानकारी देकर चर्चा करें । प्रत्यक्ष जाकर विद्‌यार्थियों को वहाँ की सूचना पढ़ने के लिए कहें । उनसे अपने गाँव/शहर के महत्त्वपूर्ण स्थानों के दूरध्वनि क्रमांकों की सूची बनवाएँ और सहायता लेने की सूचना दें ।

● सुनो, समझो और गाओ :

२. तूफानों से क्या डरना

– *शिखा शर्मा*

परिचय : शिखा शर्मा प्रसिद्‌ध कवयित्री मानी जाती हैं ।
प्रस्तुत कविता में मनुष्य की जुझारू वृत्ति को दर्शाया गया है ।

स्वयं अध्ययन

✲ चित्र देखकर हाव-भाव की नकल करो ।

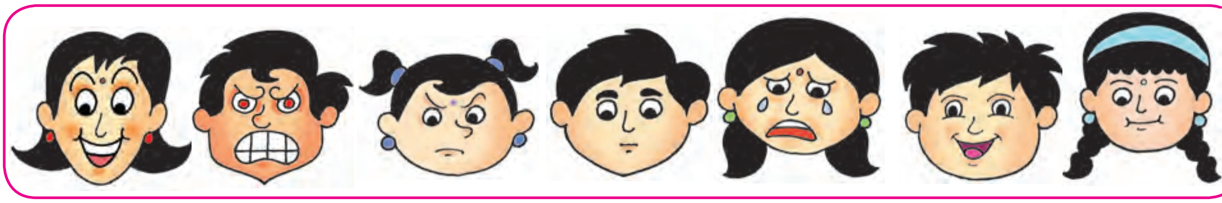

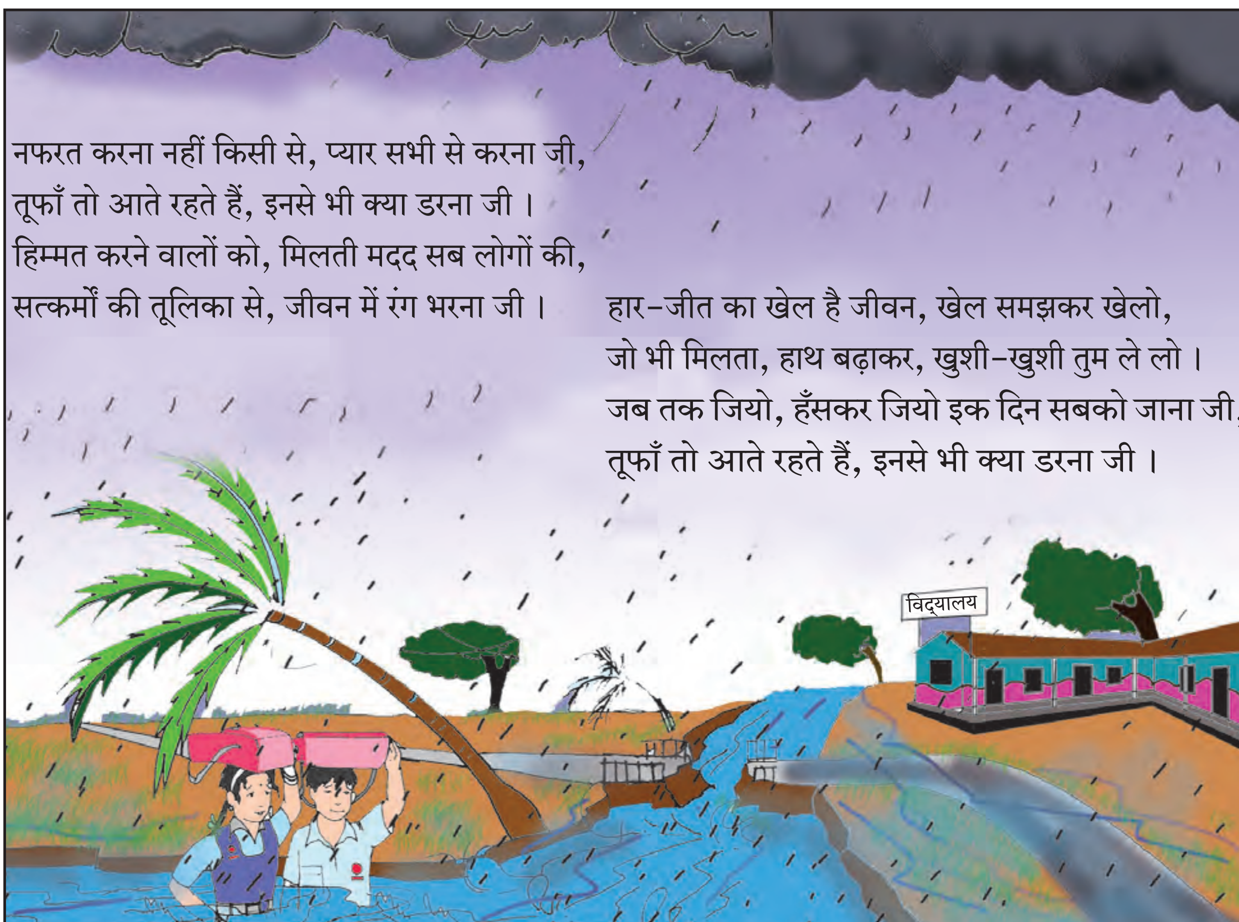

नफरत करना नहीं किसी से, प्यार सभी से करना जी,
तूफाँ तो आते रहते हैं, इनसे भी क्या डरना जी ।
हिम्मत करने वालों को, मिलती मदद सब लोगों की,
सत्कर्मों की तूलिका से, जीवन में रंग भरना जी ।

हार-जीत का खेल है जीवन, खेल समझकर खेलो,
जो भी मिलता, हाथ बढ़ाकर, खुशी-खुशी तुम ले लो ।
जब तक जियो, हँसकर जियो इक दिन सबको जाना जी,
तूफाँ तो आते रहते हैं, इनसे भी क्या डरना जी ।

❑ विद्‌यार्थियों का ध्यान लयात्मकता की ओर आकर्षित करते हुए कविता शीघ्रता से कहलवाएँ । उनसे मुखर वाचन, मौन वाचन करने के लिए कहें, फिर नए शब्दों के अर्थ पूछें । कविता में आए जीवन मूल्यों पर गहन विश्लेषणात्मक चर्चा कराएँ ।

खोजबीन

भारतीय स्थानीय समय के अनुसार देश-विदेश के समय की तालिका बनाओ ।

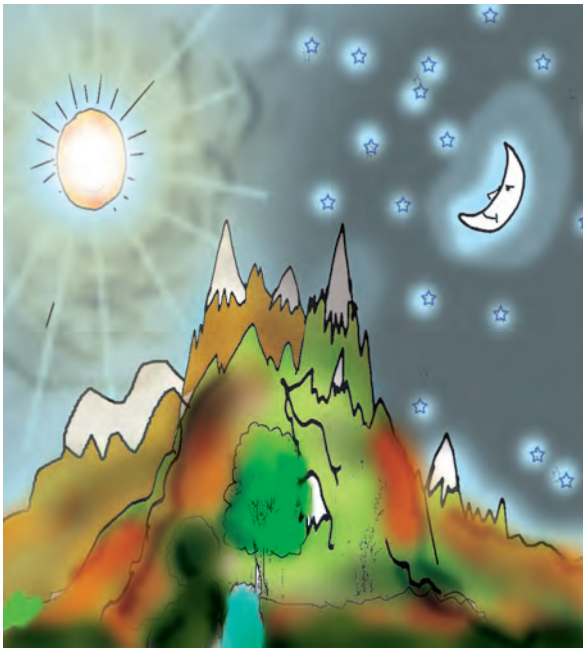

धूप-छाँव जीवन का हिस्सा, कभी उजाला, कभी अँधेरा,
रात हो चाहे जितनी लंबी, उसका भी है अंत सवेरा ।
समय एक-सा कभी न रहता, थोड़ा धीरज धरना जी,
तूफाँ तो आते रहते हैं, इनसे भी क्या डरना जी ।

देह-अभिमान के कारण, देखो कितनी महामारी है,
सबको सच्ची राह दिखाना, अपनी जिम्मेदारी है ।
आत्मज्ञान के दीप जलाकर, दूर अँधेरा करना जी,
तूफाँ तो आते रहते हैं, इनसे भी क्या डरना जी ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
सत्कर्म = अच्छा कार्य
अभिमान = घमंड
महामारी = संक्रामक भीषण रोग
तूलिका = ब्रश
धीरज = धैर्य
आत्मज्ञान = स्वंय का ज्ञान
देह = शरीर

भाषा की ओर

कविता में आए किन्हीं पाँच शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखो ।

.... × ....

.... × ....

.... × ....

.... × ....

.... × ....

सुनो तो जरा

रेडियो पर एकाग्रता से भजन सुनो और दोहराओ ।

बताओ तो सही

'साक्षरता अभियान' के बारे में जानकारी बताओ ।

वाचन जगत से

मीरा का पद पढ़ो और सरल अर्थ बताओ ।

मेरी कलम से

महीने में एक बार कविता का श्रुतलेखन करो ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि समय का चक्र रुक जाए तो ......

✻ इस कविता का सार लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

हमारी सोच सकारात्मक होनी चाहिए ।

विचार मंथन

।। करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान ।।

अध्ययन कौशल

समाज सेवी महिला की जीवनी पढ़कर प्रेरणादायी अंश चुनो और बताओ ।

KLFR5A

समझो हमें

✻ पंचमाक्षर (ङ, ञ,ण,न,म) के अनुसार पतंगों में उचित शब्दों की जोड़ियाँ मिलाओ ।

जैसे-कंगना

कंगना, संघमित्रा
पंख, कंकाल

चंचल, जंजाल
पंछी, झंझा

गंधर्व, अंदर
अंतिम, मंथन

कंठ, डंडा
पंढरी, घंटा

चंबल, इंफाल
अचंभा, चंपारन

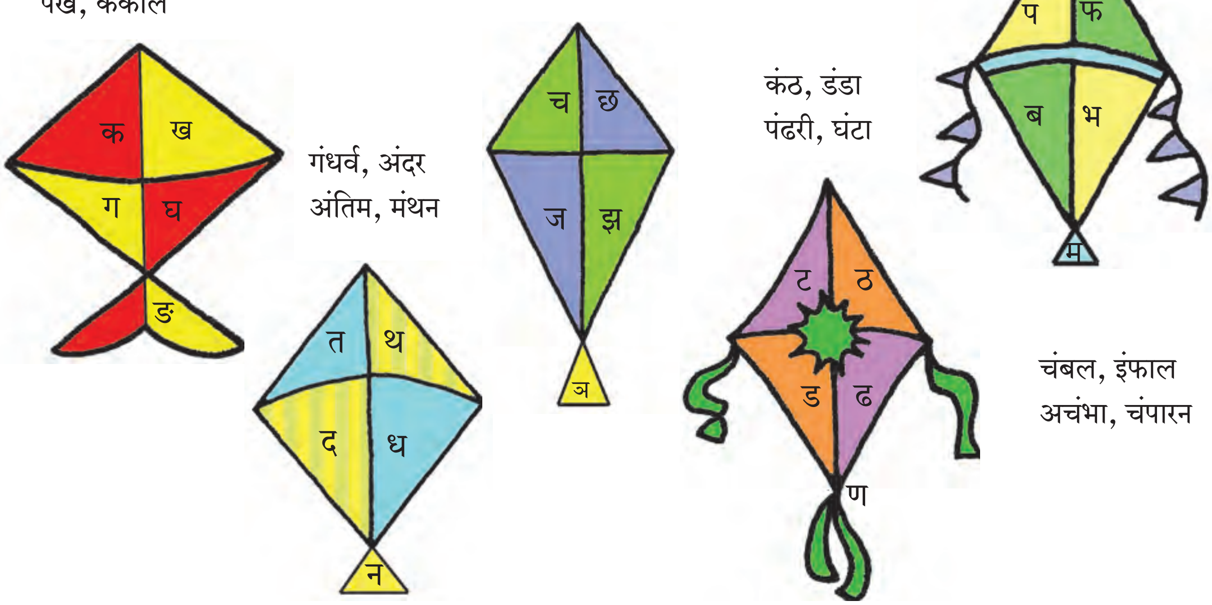

● **पढ़ो, समझो और लिखो :**

३. कठपुतली

प्रस्तुत कहानी द्‌वारा जीवन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए अंधविश्वास से दूर रहने का संदेश दिया गया है ।

विशेषता हमारी

✲ चित्र देखकर विशेषणयुक्त शब्द बताओ और उनका वाक्यों में प्रयोग करो ।

शहर में आनंद महोत्सव का आयोजन किया गया था । जिसमें विभिन्न राज्यों की संस्कृति एवं शिल्पकला की तथा अन्य दुकानें सजी हुई थीं। इनमें विविध कलाओं की विशेषताओं के दर्शन, खेल, प्रदर्शनी, मौत का कुआँ, छोटे-बड़े झूले, कठपुतली का नृत्य और खाने-पीने की दुकानें आकर्षित कर रही थीं। प्रीति अपने मित्र तेजस, प्रसन्ना और मृण्मयी के साथ महोत्सव देखने आई थी । आईसक्रीम का आनंद लेते हुए वह कठपुतली के नृत्य की दुकान के सामने सूत्रधार की आवाज सुनकर रुकी । वह कह रहा था-

''आओ, आओ सारे बहन-भाई
शकुन-अपशकुन की है लड़ाई
दिखाओ इसमें तुम चतुराई
कर लो आज मोटी कमाई । ''

❑ श्यामपट्ट पर कहानी में आए विशेषणों (काली, बहुत, एक, ये) की सूची बनाएँ और उन्हें भेदों सहित समझाएँ । इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग कराएँ । कहानी में आए नए शब्दों के अर्थ बताकर उनसे अपने शब्दों में कहानी लिखवाएँ ।

जरा सोचो .... लिखो

यदि तुम्हें अलादीन का चिराग मिल जाए तो...

प्रीति ने देखा-बाजू में एक बोर्ड रखा था, जिस पर लिखा था-

''आइए, आइए, हमें गलत साबित करके, हजार रुपए ले जाइए ।'' प्रीति ने सोचा यह कौन-सा बड़ा काम है चलो, आज आजमाते हैं । प्रीति अपने मित्रों के साथ अंदर गई तो देखती क्या है, कुछ कठपुतलियाँ रंग-बिरंगे पहनावे पहनकर आँखें मटकाती हुई इधर से उधर आ जा रही थीं । लोगों का स्वागत करती हुई सूत्रधार के वाक्य को दोहरा रही थीं। आवाज तो विद्‌यार्थियों की है पर लगता है कि कठपुतलियाँ बोल रही हैं ।

तभी एक कठपुतली हाथ में एक नारियल लेकर आई और कहने लगी -''बहनो और भाइयो तथा साथ में आई भाभियो, नमस्कार, प्रणाम, वेलकम ! किसी भी नए कार्य का प्रारंभ नारियल फोड़कर किया जाता है। आइए, हम भी अपने कार्यक्रम का प्रारंभ नारियल फोड़कर करते हैं '' उसने जोर से नारियल को जमीन पर पटका । अरे ! ये क्या नारियल में से फूल ! आश्चर्य चकित होकर कठपुतली बोली-''देखो, देखो अंधविश्वास ,नारियल से फूल निकले ।'' इसपर सूत्रधार बोला-''देखो मित्रो, यह है हाथ की सफाई । सूत्रधार ने बताया कि नारियल में तीन छेद (आँखें) होते हैं, उनमें से किसी एक छेद को सलाई की सहायता से

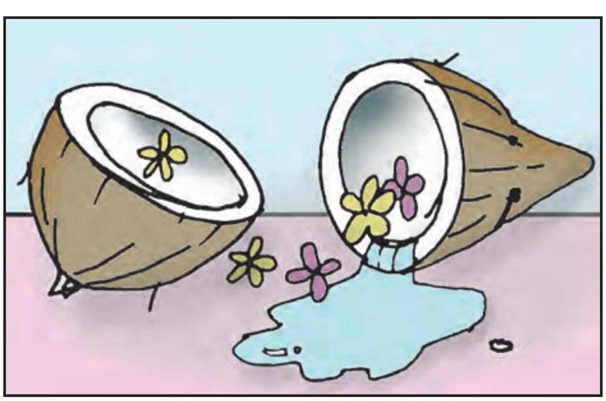

खोलकर शाम को उसमें से मोगरे या चमेली की कलियाँ अंदर पहुँचाई जाती हैं । प्रयोग के समय तक वे खिलकर फूल बन जाती हैं जिसे लोग अंधश्रद्‌धा समझते हैं, ऐसे ही बाल आदि का प्रयोग कर लोगों को डराते हैं ।'' इतना कहते ही सभी कठपुतलियाँ कमर मटकाती हुई गाने लगीं-

''देखो, देखो सारे बहन-भाई
शकुन-अपशकुन की है लड़ाई
नारियल ने जो खूबी दिखाई,
देखो सभी के सामने आई । ''

तभी एक काली बिल्ली इन कठपुतलियों के सामने से भागी और सारी कठपुतलियाँ ठिठककर खड़ी हो गईं । उनमें से एक मुँह पर हाथ रखकर बोली- ''हाय, हाय ! लो, अब तो हो गया कार्यक्रम का बंटाधार ।'' दूसरी कठपुतली बोली-''क्यों, क्या हुआ बहना ।'' पहली कठपुतली बोली-''अरे, देखा नहीं, काली बिल्ली ने रास्ता काटा ।'' तभी सूत्रधार ने प्रवेश कर बताया, ''देखो, बिल्ली को वहाँ उसका प्रिय खाद्‌य चूहा दिखा । जिसे देख बिल्ली उसे पकड़ने को लपकी । उसने जान-बूझकर तुम्हारा रास्ता नहीं काटा है ।'' सूत्रधार के इतना कहते ही कठपुतलियाँ आकर गाने लगीं -

''देखो, देखो, सारे बहन-भाई
शकुन-अपशकुन की है लड़ाई
बिल्ली मौसी जब सामने आई,
भगदड़ सबने खूब मचाई । ''

सारे दर्शक तालियाँ बजाने लगे। तभी एक कठपुतली आऽछीं, आऽछीं कर छींकते हुए आई । एक बार फिर नाचती हुई सारी कठपुतलियाँ डरकर रुक गईं । तभी दूसरी बोली-''अरे रे ! फिर अपशकुन हो गया। आज तो सचमुच ही हमारा कार्यक्रम नहीं होगा ।

- विद्‌यार्थियों से कहानी पढ़वाएँ और प्रश्न बनाकर एक-दूसरे से पूछने के लिए कहें । उनसे अंधविश्वास पर चर्चा कराएँ । इन्हें दूर करने के उपायों को खोजकर उसपर अमल करने के लिए कहें । कोई कार्य पूरा होने या न होने के कारणों पर चर्चा करें ।

स्वयं अध्ययन

उपलब्ध सामग्री से कठपुतली बनाओ और किसी कार्यक्रम में उसका मंचन करो ।

चलो, चलो ।'' तभी सूत्रधार उन्हें रोकते हुए बोला- ''दोस्तो, हम भी यही करते हैं और अपने कार्य को समय पर करने की बजाय या तो उसे विलंब से करते हैं या करते ही नहीं । परिणाम कार्य की अपूर्णता और नाम शकुन-अपशकुन का ।'' सूत्रधार अभी बात ही कर रहा था कि वह कठपुतली फिर से छींकी- आऽछीं । सूत्रधार ने उस कठपुतली से पूछा-''बहना, कहाँ से आ रही हो?'' कठपुतली बोली-''भैया, पासवाली लल्लन चक्की की गली से । '' तब सूत्रधार हँसते हुए बोला, ''आज लल्लन की चक्की पर हरिकिशनदास के यहाँ की शादी की मिरची पिसाई जा रही है । जो भी उस गली से गुजरता है, ऐसे ही छींकता हुआ आ रहा है ।''

इधर सूत्रधार बात कर ही रहा था कि तभी दूसरी कठपुतली भी छींकती हुई बड़बड़ाती हुई आई, ''आज पता नहीं लल्लन क्या पीस रहा है ? सारा मोहल्ला ही छींक रहा है ।'' इतना सुनना था कि सारी कठपुतलियाँ नाचकर गाने लगी –

''देखो, देखो, सारे बहन-भाई
शकुन-अपशकुन की है लड़ाई ।
छींकों ने जब होड़ मचाई,
काम की गति क्यों हमने रुकाई ?''

अब दर्शक भरपूर मजा लेने लगे । सूत्रधार बोला- ''मित्रो, आपने देखा, हर घटना के पीछे कोई-न-कोई वैज्ञानिक या व्यावहारिक कारण होता है, जिसे हम शकुन-अपशकुन का नाम देकर समय पर अपना काम नहीं करते हैं । जिसका असर हमारे काम पर पड़ता है । उचित फल हमें नहीं मिलता है । अत: आपसे प्रार्थना है कि कृपया कुप्रथा से बचें ।'' अंत में सभी कठपुतलियाँ एक साथ मंच पर आकर गाने लगीं-

''देखो-देखो सारे बहन-भाई
करो शकुन-अपशकुन की खत्म लड़ाई
घर-घर विज्ञान ने रोशनी फैलाई
जन-जन के मन से अंधश्रद्‌धा भगाई ।''

इस मजेदार बात को लेकर प्रीति बड़ी ही खुश हुई । वह अब घर जाकर बुआ से बताएगी, ''विश्वास करो, अंधविश्वास नहीं ।''

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

आजमाना = उपयोग अथवा प्रयोग करके देखना

असर = परिणाम

ठिठकना = सहसा रुकना

मुहावरा

बंटाधार करना = पूरी तरह बरबाद करना

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग लगाकर लिखो ।

....	शकुन, डर, पूर	डर, स्वागत, व्यावहारिक	....
....	अप, नि, सु	अ, कु, भर	....
....	प्रथा		....

KLPM6X

खोजबीन

अंधश्रद्‌धा के कारण और उसे दूर करने के उपाय ढूँढ़ो और किसी एक प्रसंग को प्रस्तुत करो ।

सुनो तो जरा

चुटकुले, पहेलियाँ सुनो और किसी कार्यक्रम में सुनाओ ।

बताओ तो सही

किसी एक संस्मरणीय घटना का वर्णन करो ।

वाचन जगत से

हितोपदेश की कोई एक कहानी पढ़ो और उससे संबंधित चित्र बनाओ ।

मेरी कलम से

हिचकी आने जैसी क्रियाओं की सूची बनाकर उनके कारण लिखो ।

* सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखो ।

१. एक कठपुतली हाथ में एक .... लेकर आई ।
(छड़ी, फूल, नारियल)

२. सारी कठपुतलियाँ .... खड़ी हो गईं।
(ठिठककर , भागकर, सहमकर)

३. जिसे लोग .... समझते हैं ।
(श्रद्‌धा, विश्वास, अंधविश्वास)

४. सारा .... ही छींक रहा है ।
(शहर, मोहल्ला, नगर)

अध्ययन कौशल

नए शब्दों को शब्दकोश में से ढूँढ़कर वर्णक्रमानुसार लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

बिना सोचे विचारे किसी बात पर विश्वास ना करें ।

विचार मंथन

।। विज्ञान का फैलाओगे प्रकाश तो होगा अंधविश्वास का नाश ।।

* नीचे दी गई संज्ञाओं का वाक्यों में प्रयोग करो ।

१. पानी : ....
....

२. भीड़ : ....
....

३. ईमानदारी : ....
....

४. हाथी : ....
....

५. भारत : ....
....

* नीचे दिए सर्वनामों के चित्र देखो, पहचानो और वाक्यों में प्रयोग करो । (तुम, कोई, हम, आप)

१. ....
....

२. ....
....

३. 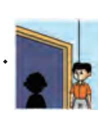 ....
....

४. ....
....

● सुनो, समझो और पढ़ो :

४. सोना और लोहा

– *रामेश्वरदयाल दुबे*

जन्म : २१ जून १९०८ उ. प्र. **मृत्यु :** २४ जनवरी २०११ **रचनाएँ :** 'अभिलाषा', 'चलो-चले', 'डाल-डाल के पंछी',' माँ यह कौन', 'फूल और काँटा' आदि । **परिचय :** आप प्रसिद्ध्‍ध बाल साहित्यकार हैं ।
प्रस्तुत संवाद में रूप-रंग की अपेक्षा सद्‍गुणों के महत्व पर जोर दिया गया है ।

अध्ययन कौशल

विभिन्न धातुओं के नाम और उनसे बनने वाली वस्तुएँ लिखो ।

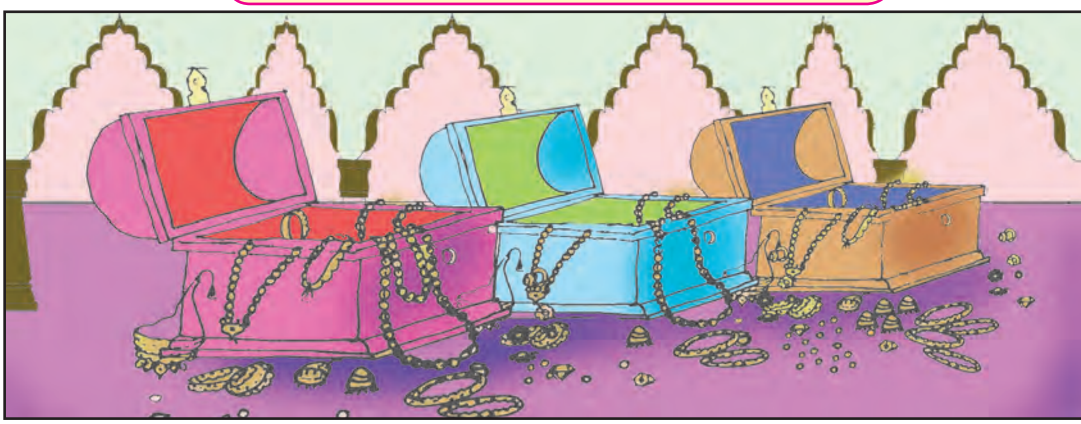

सोना : मैं स्वर्ण, मैं सोना, मेरी भी क्या शान है ! जिसे देखो, मुझे चाहता है; मेरे गुण ही ऐसे हैं ।

लोहा : नमस्ते ! क्या कह रहे थे – मेरा रूप ही ऐसा है, मेरे गुण ही ऐसे हैं ?

सोना : मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ? मेरा चमकता पीला रंग देख ! संसार में मैं सबसे सुंदर हूँ ।

लोहा : सोने, पहले यह तो बता कि तू तिजोरी से बाहर क्यों आया ? लाख बार कहा कि तेरा बाहर आना खतरे से खाली नहीं, मगर तू मानता ही नहीं । तेरी रक्षा का भार मुझपर है।

सोना : राजा की रक्षा उसके नौकर-चाकर करते ही हैं ।

लोहा : अच्छा, तू राजा और मैं नौकर ? मेरे एक चाँटे से तेरा रूप बदल जाएगा । चल भीतर ।

सोना : भले ही तुम मुझसे बड़े हो, मगर मुझे डाँटने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं । मेरे दस ग्राम का मूल्य पच्चीस हजार तो तुम पच्चीस-तीस रुपयों में किलो के हो ।

लोहा : रुपयों में किसी वस्तु का मूल्य लगाना व्यर्थ है । देखना यह चाहिए कि कौन कितना उपयोगी है । सोने से पेट नहीं भरता । मैं सबका हाथ बँटाता हूँ ।

सोना : अरे, लोहे से कैसे पेट भरता है ?

लोहा : मैं अगर न रहूँ, तो किससे बनेगा फावड़ा, कुदाल, खुरपी ? मकान बनाना हो, तो लोहा चाहिए । युद्‍ध में लोहे के ही अस्त्र-शस्त्र काम देते हैं । कोई बड़ा काम करना हो, लोहे के बिना हो ही नहीं सकता । रोटियाँ भी लोहे के तवे पर ही सेंकी जाती हैं । सभी कुछ लोहे से बनता है ।

सोना : अँगूठी, माला, बाली लोहे से नहीं बनते । उसके लिए मेरी ही तलाश होती है । मैं राजा-महाराजाओं, धनिकों का प्यारा हूँ । मैं ऊँची जगह रहता हूँ , नीचे नहीं उतरता ।

❑ संवाद का आदर्श वाचन करें । मुखर वाचन करवाएँ । मित्र के कौन-से गुण आपको अच्छे लगते हैं पूछें । खेल भावना के अनुसार अच्छे गुण स्वीकार करने और दोषों को दूर करने के लिए कहें । संवाद में आए कारकों का वाक्य प्रयोग कराएँ ।

विचार मंथन

।। आराम हराम है ।।

लोहा : तू राजाओं-धनिकों का प्यारा है, मैं किसानों-मजदूरों का प्यारा हूँ। गरीबों की सेवा करने में मुझे सुख मिलता है। राजाओं के दिन लद गए अब तो श्रमिकों के दिन हैं।

सोना : मुझसे तो मेहनत नहीं होती। मैं तो आराम से रहता आया हूँ और रहना चाहूँगा।

लोहा : आराम हराम है। श्रम में ही जीवन की सफलता है, तुमने देखा है, मैं कितना काम करता हूँ। मैं कल-कारखानों में दिन-रात काम करता हूँ। जो काम करेंगे, उन्हीं का सम्मान होगा।

सोना : तो मेरा अब क्या होगा, दादा, मुझे घबराहट हो रही है।

लोहा : तू डाल-डाल मैं पात-पात, डर मत सोने ! मैं सदा तेरी रक्षा करता आया हूँ, आगे भी करूँगा, मगर अब तू घमंड करना छोड़ दे।

सोना : छोड़ दूँगा भैया, मगर मेरी रक्षा करना।

लोहा : अच्छा, अच्छा ! तू मेरा छोटा भाई है न। चल भीतर चल, बिना पूछे बाहर मत आना।

मैंने समझा

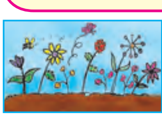

शब्द वाटिका

नए शब्द

शान = ठाट-बाट
धनिक = धनवान
मूल्य = महत्त्व, कीमत
श्रमिक = मजदूर
तलाश = खोज

मुहावरा

दिन लद जाना = बीती बात होना

कहावत

तू डाल-डाल, मैं पात-पात = तुम निपुण हो परंतु मैं तुमसे अधिक निपुण हूँ।

भाषा की ओर

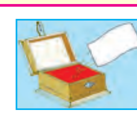

निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाकर लिखो।

....

....

....

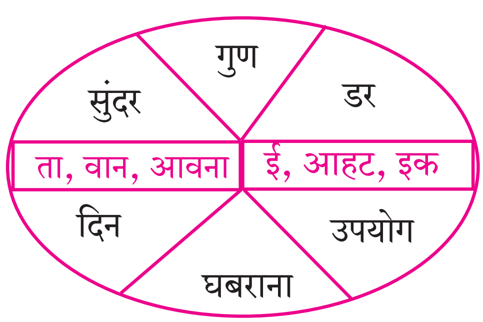

सुनो तो जरा

बस/ रेल स्थानक की सूचनाएँ ध्यानपूर्वक सुनकर सुनाओ ।

बताओ तो सही

थर्मामीटर में किस धातु का प्रयोग होता है, बताओ ।

वाचन जगत से

दुकानों के नाम फलक पढ़ो और उनका अभिनय करो ।

मेरी कलम से

अंकुरित अनाजों की सूची बनाओ और उपयोग लिखो।

सदैव ध्यान में रखो

प्रत्येक का अपना-अपना महत्त्व होता है।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि खनिज तेल का खजाना समाप्त हो जाए तो...

* सही या गलत बताओ ।

१. युद्ध में लोहे के ही अस्त्र-शस्त्र काम देते हैं ।

२. रोटियाँ भी सोने के तवे पर सेंकी जाती हैं ।

३. श्रम में ही जीवन की सफलता है ।

४. जो काम करेंगे, उन्हीं का अब सम्मान नहीं होगा ।

खोजबीन

रुपयों (नोट) पर लिखी कीमत कितनी और किन भाषाओं में अंकित है, बताओ ।

स्वयं अध्ययन

सद्‍गुणों को आत्मसात करने के लिए क्या करोगे, इसपर आपस में चर्चा करो ।

* निम्नलिखित शब्दों का रोमन लिपि में लिप्यंतरण करो ।

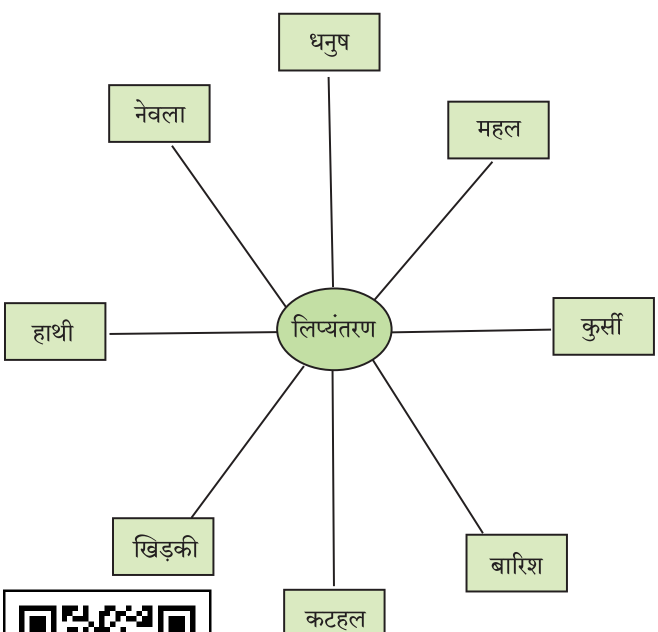

KLYI8K

* निम्नलिखित कारकों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

ने ---------------------

को ---------------------

से ---------------------

को ---------------------

से ---------------------

का, की, के ---------------------

में, पर ---------------------

अरे! ---------------------

● **समझो और बताओ :**

५.(अ) क्या तुम जानते हो ?

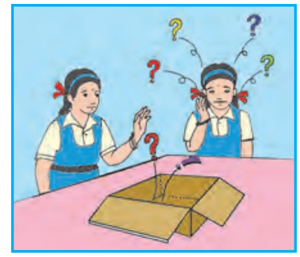

१. भारत में सबसे अधिक जनसंख्या वाला शहर कौन-सा है ?

२. विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय कौन-सा है ?

३. अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कब मनाया जाता है ?

४. विश्व का सबसे बड़ा जीव कौन-सा है ?

५. किस ग्रह को ''भोर का तारा'' कहते हैं ?

६. भारत का राष्ट्रीय मानक समय किस शहर में माना जाता है ?

७. भूभाग की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा और सबसे छोटा राज्य कौन-सा है ?

८. भारत का संविधान बनाने में कितना समय लगा ?

९. भारत में कितने राज्य और कितने केंद्रशासित प्रदेश हैं ?

१०. विश्व में सबसे ऊँचाई पर कौन-सी सड़क है ?

❑ विद्यार्थियों से उपरोक्त जानकारी पर चर्चा करें । उनसे ऐसी अन्य जानकारियों का संग्रह कराएँ । आवश्यकतानुसार अन्य विषय शिक्षकों की सहायता लें । उन्हें प्रश्न मंच का आयोजन करने के लिए कहें ।

KM8EA8

(ब) पहेलियाँ

जल में, थल में रहता,
वर्षाऋतु का गायक ।
कहो कौन टर्र-टर्र करता,
इधर-उधर फुदक-फुदक ।

मिट्टी धूप हवा से भोजन,
वह प्रतिदिन ही लेता है ।
कहो कौन, जो प्राणवायु संग,
छाया भी हमको देता है ।

अर्धचक्र और सतरंगी,
नभ में बादल का संगी ।
कहो कौन, जो शांत मनोहर,
रंग एक है, जिसमें नारंगी ।

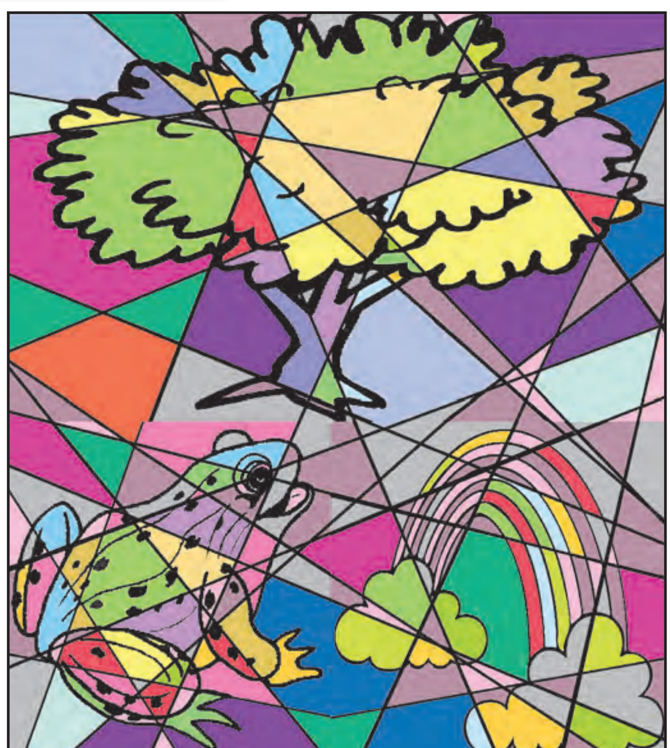

❑ विद्यार्थियों से पहेलियों का मुखर और मौन वाचन करवाएँ। उपरोक्त पहेलियाँ बूझने एवं उनके हल चौखट में लिखने के लिए कहें। कक्षा में अन्य पहेलियाँ सुनाएँ और बुझवाएँ । उन्हें अन्य पहेलियाँ ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करें तथा उनका संग्रह करवाएँ ।

● **पढ़ो और समझो :**

६. स्वास्थ्य संपदा

– महात्मा गांधी

जन्म : २ अक्तूबर १८६९, पोरबंदर, गुजरात, **मृत्यु :** ३० जनवरी १९४८ **परिचय :** आप 'राष्ट्रपिता' की उपाधि से जाने जाते हैं ।

प्रस्तुत पत्र में यह बताया गया है कि खुली हवा में नियमित रूप से व्यायाम तथा समय पर किया गया संतुलित भोजन ही स्वस्थ जीवन की पूँजी है ।

कार्य हमारा

✻ चित्र देखकर क्रियायुक्त शब्दों से वाक्य बनाओ ।

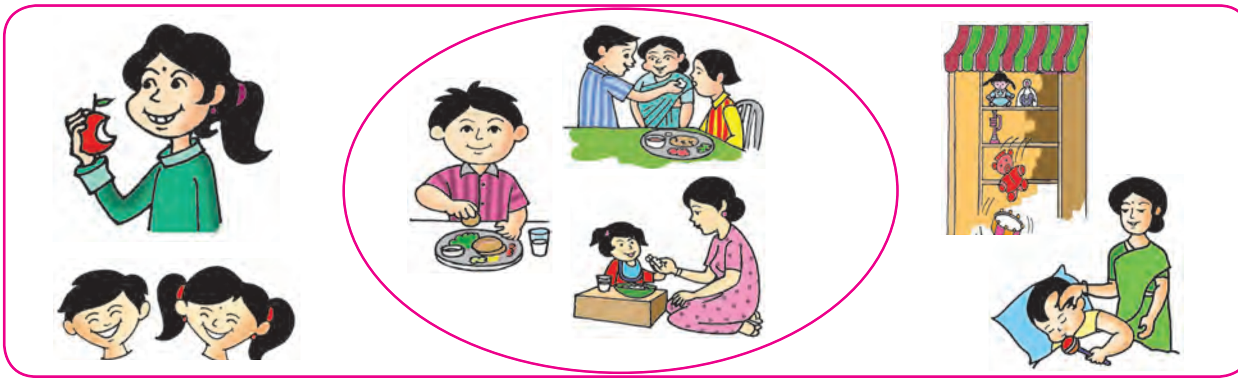

येरवडा मंदिर
८-११-३२

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र अभी मेरे हाथ लगा, सुना और उसका जवाब लिख रहा हूँ । तुम चाहते हो वे सब आशीर्वाद टोकरियों में भर तुम्हारे जन्मदिवस पर तुम्हें मिलें । तुम्हारे स्वास्थ्य के संबंध में सब कुछ जानने के बाद भी जो विचार मैंने बताए हैं, उनपर मैं स्वयं दृढ़ हूँ । तुमको अपने खर्च से भोजन प्राप्त करने की छुट्टी मिल सके तो उसे प्राप्त करने में कोई दोष नहीं समझता । शरीर को एक अमानत समझकर यथासंभव उसकी रक्षा करना रक्षक का धर्म है । मौज-मजे के लिए गुड़ की एक डली भी ना माँगो, न लो; परंतु औषधि के तौर पर महँगे-से-महँगे अंगूर भी मिल सकें तो प्राप्त करने में कोई बुराई नहीं दिखाई देती । इसलिए ऐसे भोजन को ग्रहण करने में उद्‌वेग की आवश्यकता

❑ पत्र में आए हुए क्रिया शब्दों (पियो, होते हैं, मिल सकें, थे, खाया, खिलाया, खिलवाया) को श्यामपट्ट पर लिखकर विद्यार्थियों से इसी प्रकार के अन्य शब्द कहलवाएँ । उन्हें क्रिया के भेद प्रयोग द्‌वारा समझाएँ । दृढ़ीकरण होने तक अभ्यास करवाएँ ।

स्वयं अध्ययन

डाक टिकटों का संकलन करके प्रदर्शनी का आयोजन करो ।

नहीं । ऐसी ही स्थिति में दूसरों को भी ऐसा खाना खिलाया जा सके तो खिलाना चाहिए । मेरी दृष्टि में जितने गेहूँ मिलते हैं, उतने खाने की जरूरत नहीं । गुड़ को बिल्कुल छोड़ देना उचित मानता हूँ । तुम्हारे शरीर को गुड़ की जरा भी आवश्यकता नहीं । इसके बदले निर्दोष, शुद्‌ध शहद लेना अधिक अच्छा है परंतु जब तक मीठे फल मिल सकते हैं, उसकी भी जरूरत नहीं । दूध की मात्रा बढ़ाना अच्छा है ।

जैतून के तेल की जगह मक्खन लेते हो, यह ठीक ही है । मक्खन में जो विटामिन होते हैं, वे जैतून के तेल में नहीं होते । साग में हरी सब्जी होनी चाहिए । आलू वगैरह लगभग रोटी का स्थान लेते हैं । इनमें स्टार्च होता है । तुमको स्टार्च की कम-से-कम जरूरत है और जितनी होगी, वह सब गेहूँ से पूरी हो जाएगी । मक्खन, दूध काफी है । इसके घटाने-बढ़ाने का आधार वजन के ऊपर है। वजन के स्थिर हो जाने तक और हजम होता रहे, तब तक मक्खन की अथवा दूध की या दोनों की मात्रा बढ़ाते जाना चाहिए। तरकारियों में लौकी तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की सब्जियाँ, फूलगोभी, पत्तागोभी, बिना बीज की सेम, बैंगन इन सबकी गिनती अच्छी, हरी सब्जियों में होती है। गेहूँ का आटा चोकर मिला हुआ होना चाहिए । यदि गेहूँ बिल्कुल साफ करके पीसा गया हो तो उसका कोई भी अंश नहीं फेंकना चाहिए ।

फल में ताजे अंगूर, मौसंबी, संतरा, अनार, सेब, अनन्नास लेने योग्य हैं । आजकल जो प्रयोग अमेरिका में हो रहे हैं, उससे मालूम होता है कि एक ही साथ बहुत-सी चीजें नहीं मिला देनी चाहिए । फल अकेला ही खाने से उसके गुण बढ़ते हैं । भूखे पेट खाना तो सर्वोत्तम है । अंग्रेजी में कहावत भी है कि सुबह का फल सोना है और दोपहर का चाँदी है, इसलिए पहला खाना अकेले फल का होना चाहिए । क्या तुम सुबह गर्म पानी पीते हो ? सुबह गर्म पानी पियो तो हर्ज नहीं । तुमको चौबीसों घंटे खुली हवा में रहने की इजाजत मिल सकती हो तो लेनी

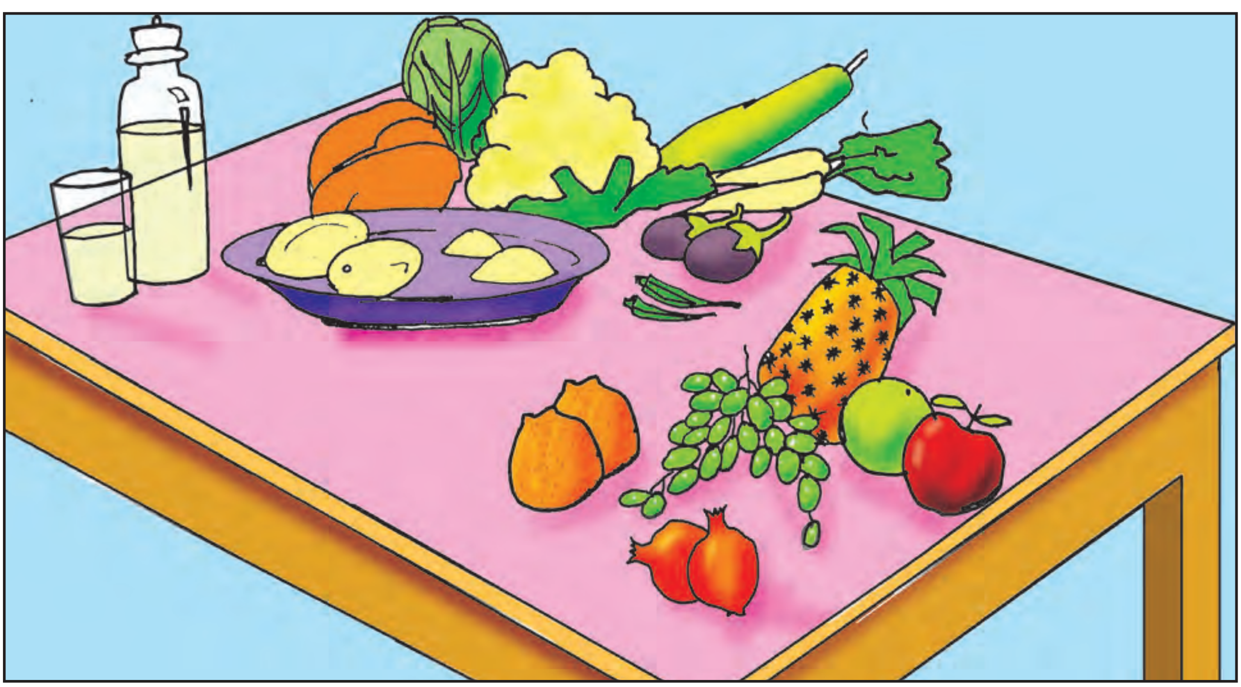

- इस अनौपचारिक पत्र के किसी एक परिच्छेद का उचित उच्चारण के साथ आदर्श वाचन करके मुखर वाचन कराएँ। नए शब्दों का श्रुतलेखन करवाएँ। उन्हें पत्र लेखन विधि की जानकारी दें और उसके प्रकारों को समझाएँ। अन्य औपचारिक पत्र पढ़ने के लिए दें।

जरा सोचो .....लिखो

यदि भोजन से नमक गायब हो जाए तो...

चाहिए । खुली हवा में रोज धीरे-धीरे प्राणायाम कर सको तो अच्छा है ।

रात की सर्दी से डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं । कंबल गले तक अच्छी तरह ओढ़ लिया हो और सिर तथा कान पर कपड़ा लपेट लो तो फिर कोई हानि नहीं । चौबीसों घंटे शुद्‌ध-से-शुद्‌ध हवा श्वास के लिए फेफड़ों में जाए, यह अति आवश्यक है । सुबह की धूप सहन हो सके तो इस तरह शरीर को खुली हवा में जितना खुला रख सको, उतना रखना चाहिए ।

माधव जी की गाड़ी तो ठीक चल ही रही है । वहाँ जो साथी रहते हों और जो आवें सो हम तीनों का यथायोग्य आशीर्वाद पावें ।

बापू के आशीर्वाद

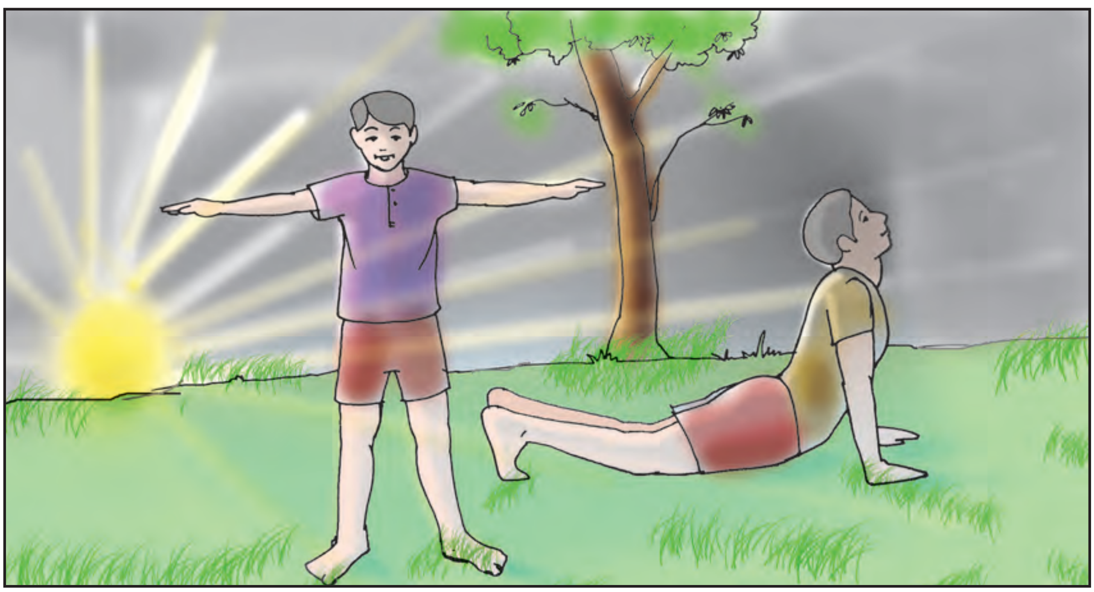

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

अमानत = धरोहर/थाती | उद्‌वेग = प्रबलता

निर्दोष = दोष रहित | इजाजत = अनुमति

सर्वोत्तम = सर्वश्रेष्ठ

चोकर = गेहूँ का आटा छानने के बाद बचा हुआ भाग

खोजबीन

खादी का कपड़ा कैसे बनाया जाता है इसकी जानकारी प्राप्त करके लिखो ।

अध्ययन कौशल

पढ़ाई का नियोजन करते हुए अपनी दिनचर्या लिखो ।

सुनो तो जरा

दूरदर्शन और रेडियो के कार्यक्रम देखो, सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

संतुलित आहार पर पाँच वाक्य बोलो ।

वाचन जगत से

साने गुरु जी द्‌वारा लिखा कोई एक पत्र पढ़ो और चर्चा करो।

मेरी कलम से

अपने मित्र को शुभकामना/बधाई पत्र लिखो ।

* एक वाक्य में उत्तर लिखो ।

१. जैतून के तेल की जगह मक्खन क्यों लिया जाना चाहिए ?

२. रक्षक का धर्म कौन-सा है ?

३. किन-किन सब्जियों की गिनती अच्छी, हरी सब्जियों में होती है ?

४. फेफड़ों के लिए क्या अति आवश्यक है ?

सदैव ध्यान में रखो

नवयुवकों की शक्ति देशहित में लगनी चाहिए ।

विचार मंथन

।। स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन । योगासन है, उत्तम साधन ।।

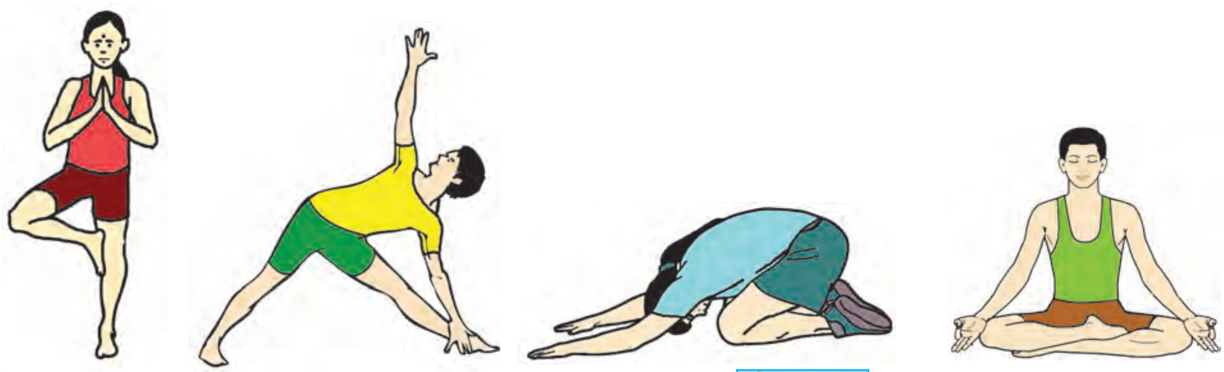

भाषा की ओर

KHHABV

निम्न विशेषण शब्दों के अपने वाक्यों में प्रयोग करके उनके प्रकार लिखो ।

पाँच

प्रकार :-----------

वाक्य : -------------------------

यही

प्रकार :-----------

वाक्य : -------------------------

कुछ

प्रकार :-----------

वाक्य : -------------------------

मीठी

प्रकार :-----------

वाक्य : -------------------------

● सीखो, बनाओ और उपयोग करो :

७. कागज की थैली

– राजश्री अभय

KMR6DI

सामग्री– पुराना समाचार पत्र, कैंची, गोंद, स्केल, पेन्सिल

विधि – १. सर्वप्रथम पुराने समाचारपत्र का एक पन्ना लो ।

२. उसके लंबाईवाले भाग की ओर से उसे दो इंच में मोड़ो ।

३. उसी पन्ने को चौड़ाईवाले भाग की ओर से एक इंच मोड़ो ।

४. तैयार पन्ने को दो बराबर भागों में मोड़कर विभाजित करो ।

५. विभाजित पन्नों को फिर चार भागों में पुनर्विभाजित करो ।

६. अब आखरी दोनों ओर के भागों से एक इंच दाएँ और एक इंच बाँए रेखा खींचो तथा उसे विपरीत दिशा में मोड़ो ।

७. अब नीचे से मोड़कर उसे चिपकाओ तथा उसे लेस, मोती, रंगीन काँच से सजाओ । स्केच पेन से उसपर अपनी पसंद के अनुसार चित्र बनाकर रँगो ।

८. अंत में दोनों ओर डोरी डालकर आकर्षक बनाओ ।

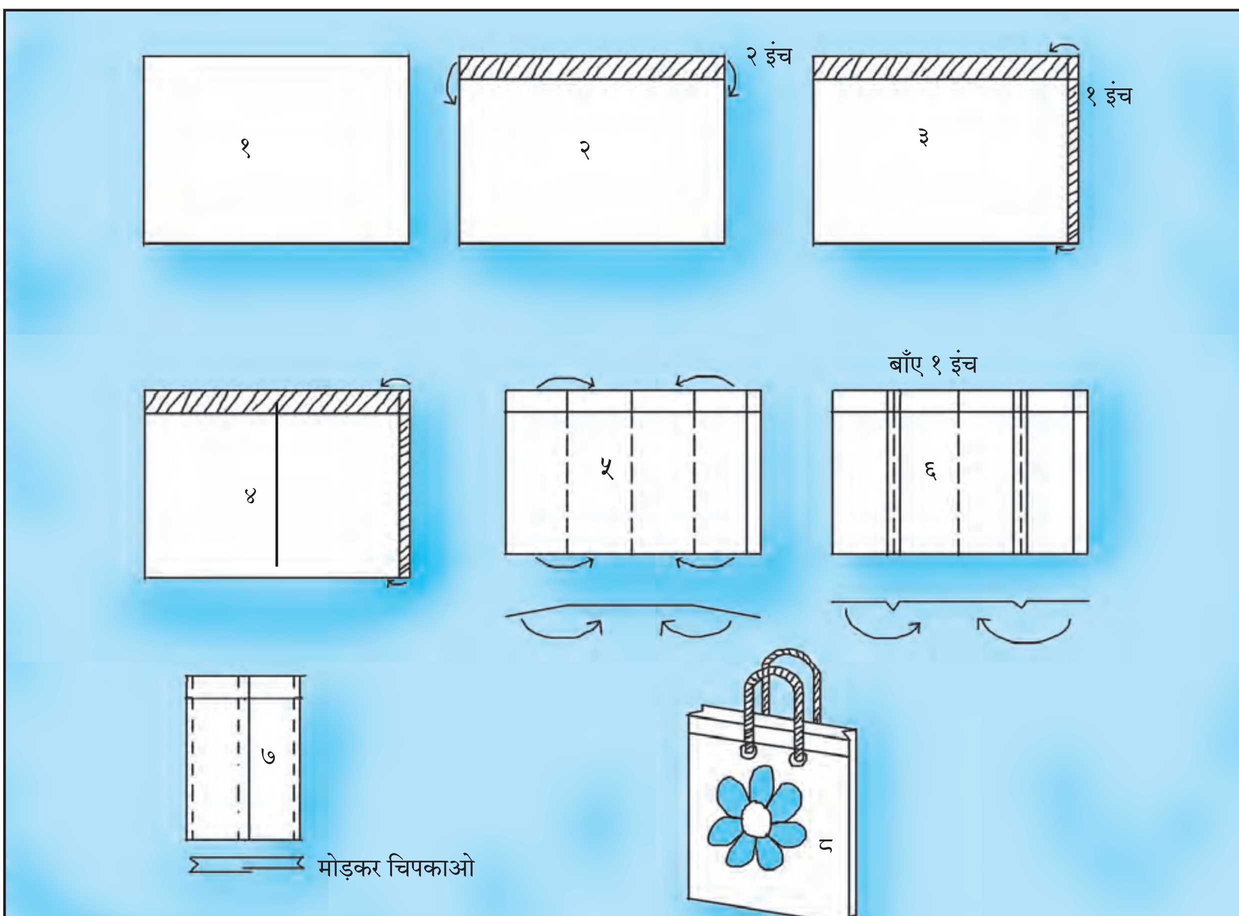

❑ विद्‌यार्थियों से कृति पढ़वाएँ और चर्चा कराएँ । उनसे कृति करवाएँ । इसी प्रकार की अन्य कोई उपयोगी वस्तुएँ बनाने और उसकी विधि लिखने के लिए कहें । उन्हें दैनिक व्यवहार में कागज की थैली का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

● **पढ़ो, समझो और लिखो :**

८. टीटू और चिंकी

– *डॉ. विमला भंडारी*

परिचय : आप संवेदना से कहानीकार, मन से बाल साहित्यकार और सक्रियता से सामाजिक कार्यकर्ता है ।
प्रस्तुत कहानी में यह बताया गया है कि हमें सदैव मिलजुलकर रहना चाहिए तथा संकट के समय एक दूसरे का साथ देना चाहिए ।

मैं कौन ?

* चित्रों के आधार पर वाक्य बनाओ :

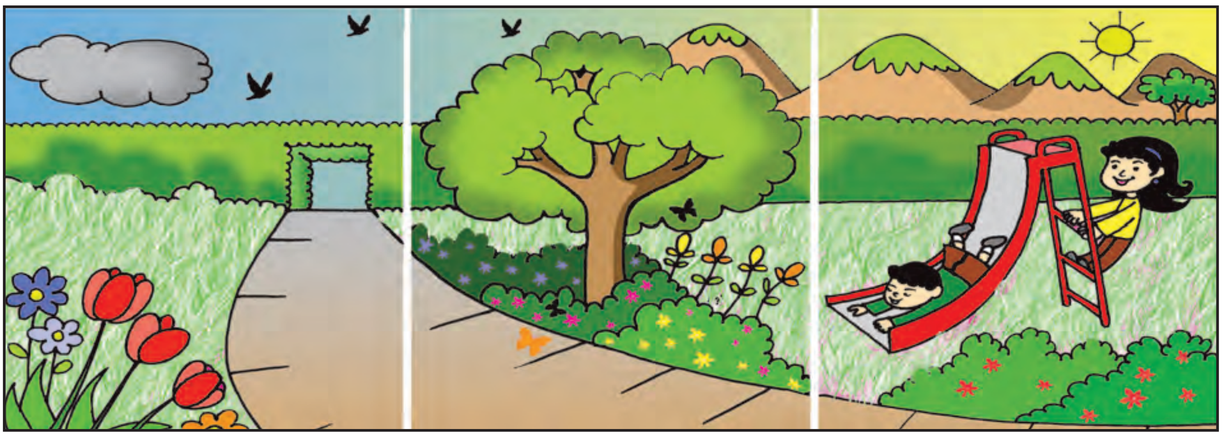

टीटू गिलहरी और चिंकी चिड़िया दोनों पड़ोसिन थीं। टीटू का घर पेड़ की खोखल में था और चिंकी का घोंसला पेड़ की शाखाओं पर। चिंकी जब दाना चुगने जाती तब टीटू सभी बच्चों का ध्यान रखती। एक दिन बच्चे आपस में झगड़ने लगे। टीटू के बच्चों का कहना था कि पेड़ उनका है। चिंकी के बच्चे भी यही बात दोहरा रहे थे कि पेड़ उनका है। लड़ते-लड़ते बच्चों में झगड़ा बढ़ गया। ''हम पड़ोसी हैं। हमें मिल जुलकर रहना चाहिए...'' टीटू उन्हें समझाने लगी! ''किंतु माँ चिंकी चिड़िया के बच्चे फलों को जूठा कर देते हैं। भला हम जूठे फल क्यों खाएँ जबकि पेड़ हमारा है।'' टीटू के बच्चे मिंटू ने कहा। ''तुम कैसे कह सकते हो कि यह पेड़ तुम्हारा है ?'' चिंकी के बच्चे रिंकी ने प्रश्न किया।

''हम पेड़ के तने में रहते हैं। हमारा जन्म इसी खोखल में हुआ। पेड़ का तना हमारा तो शाखाएँ भी हमारी। शाखाएँ हमारी तो फल भी हमारे।'' टीटू के बच्चों ने जवाब दिया। यह सुन चिंकी के बच्चे फुर्र से उड़कर शाखाओं पर जा बैठे और कहने लगे ''पेड़ हमारा है। इसकी टहनियों पर हमारा बसेरा है। इसपर

❑ विद्यार्थियों से चित्रों के आधार पर प्रश्न पूछें। वाक्य बनाने की प्रक्रिया एवं रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार (सरल, संयुक्त, मिश्र वाक्य) उदाहरण सहित समझाएँ। कहानी से इस प्रकार के वाक्य ढूँढ़कर लिखवाएँ, तथा दृढ़ीकरण होने तक अभ्यास करवाएँ।

खोजबीन

विलुप्त होते हुए प्राणियों तथा पक्षियों की जानकारी प्राप्त करके सूची बनाओ ।

हमारा नीड़ बना हुआ है जिसमें हमने आँखें खोलीं। हम तुम्हें टहनियों तक नहीं आने देंगे और न ही इसके फल खाने देंगे ।'' टीटू गिलहरी यह सुन बड़ी परेशान हुई । बच्चे लड़ाई पर उतारू थे और एक-दूसरे को पेड़ से भगाना चाहते थे ।

टीटू गिलहरी उन्हें समझाने लगी-''बच्चो, बात उस समय की है जब तुम लोगों का जन्म हुआ ही था और चिंकी ने अंडे दिए अभी एक दिन भी नहीं गुजरा था कि आसमान में अँधेरा छा गया । तेज हवाएँ चलने लगी । डर के मारे चिंकी शोर मचाने लगी। उसे डर था कि शाखाएँ हिलने से उसका घोंसला नीचे गिर जाएगा। फिर उसमें रखे अंडें भी गिरकर फूट जाएँगे। तब मैंने और चिंकी ने मिलकर अंडों को खोखल में सुरक्षित रख दिया। अभी कुछ देर हुई थी कि पानी बरसने लगा ।

पानी इतना बरसा कि नीचे बहता हुआ पानी हमारे घर तक पहुँचने लगा। हमें फिर चिंता होने लगी । हमारा घर डूब गया तो यह पानी बच्चों, अंडों को बहा ले जाएगा । तब मैंने और चिंकी ने मिलकर सभी को घोंसले में पहुँचाया फिर हम दोनों ने पत्तों से घोंसले को ढँक दिया। जैसे-तैसे रात बीती । सुबह पौ फटने के बाद हमने राहत की साँस ली । तब से अब तक हम अच्छे पड़ोसियों की तरह आपस में मदद करते आए हैं । तब हमने समझ लिया कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ।''

बच्चे कहने लगे, ''चिंकी चिड़िया को यह पेड़ छोड़ना होगा । अपने बच्चों के साथ कहीं ओर चली जाए।'' चिंकी के बच्चे भी यही बात अपनी माँ के सामने दोहरा रहे थे। दोनों की माताएँ समझा-समझाकर थक गईं पर बच्चे नहीं माने । अपनी-अपनी जिद पर अड़े रहे। अंत में टीटू और चिंकी दोनों ने पेड़ छोड़ने का मन में विचार बना लिया । उधर बिल में छिपा साँप कब से यह तमाशा देख रहा था । आज उचित मौका देखकर वह बाहर निकला और पेड़ पर चढ़ने लगा। उसने सोचा, पहले गिलहरी के बच्चों को निगलेगा। तभी चिड़िया ने देख लिया। वह जोर से चिल्लाई, ''सावधान टीटू बहन, साँप ऊपर आ रहा है । अपने बच्चों को बचाना। उन्हें मेरे घोंसले में छिपा दो ।'' कहने के बाद वह पेड़ के तने पर चोंच मारने लगी ।

❑ विद्यार्थियों सें कहानी का मुखर वाचन करवाएँ । कहानी के पात्रों के बारे में पूछें, चर्चा करें । उनसें अपने शब्दों में कहानी कहलवाएँ तथा कहानी से प्राप्त होने वाली सीख बताने के लिए कहें । उन्हें अभयारण्य की जानकारी दें तथा उनसे अभयारण्यों की सूची बनवाएँ।

विचार मंथन

।। जीवदया ही भूतदया है ।।

लगी । जहाँ-जहाँ चिंकी की चोंच लगी पेड़ से गाढ़ा चिपचिपा दूध बहने लगा। चिपचिपे गोंद के कारण साँप का पेड़ पर चढ़ना मुश्किल होने लगा । इधर टीटू ने एक-एक कर सभी बच्चों को चिंकी के घोंसले में पहुँचा दिया । चिंकी के साथ उसके बच्चे भी मदद कर रहे थे । हालाँकि अभी उनकी चोंचें नरम थीं । थक-हारकर साँप वापस बिल में लौट गया ।

टीटू और चिंकी के बच्चों ने एकता की ताकत को देख लिया था और साथ ही में पड़ोसी धर्म को भी समझ लिया था । अब उन्हें माँ के समझाने की जरूरत नहीं थी । वे जान गए कि एक और एक ग्यारह होते हैं ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

✻ नए शब्द

खोखल = पेड़ के तने में बना हुआ बड़ा छेद, कोटर

बसेरा = घर/आवास — मौका = अवसर

परेशान = त्रस्त — तना = पेड़ का निचला भाग

आसमान = आकाश

✻ मुहावरे

एक और एक ग्यारह होते हैं = एकता में शक्ति होती है

भाषा की ओर

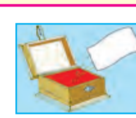

विरामचिह्न रहित अनुच्छेद में विरामचिह्न लगाओ ।
(, ! , । , ? , - , — , ' ' , " ")

काबुलीवाले ने पूछा बिटिया अब कौन सी चूड़ियाँ चाहिए मैंने अपनी गुड़िया दिखाकर कहा मेरी गुड़िया के लिए अच्छी सी चूड़ियाँ दे दो जैसे लाल नीली पीली

(यह अनुच्छेद काबुलीवाला कहानी से है ।)

सुनो तो जरा

विभिन्न पशु-पक्षियों की बोलियों की नकल सुनाओ ।

बताओ तो सही

अपने साथ घटित कोई मजेदार घटना बताओ ।

वाचन जगत से

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की कोई एक कहानी पढ़ो । उसका विषय बताओ ।

मेरी कलम से

'बाघ बचाओ परियोजना' के बारे में जानकारी प्राप्त कर लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

प्राणियों का संरक्षण करना हमारा कर्तव्य है ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि प्राणी नहीं होते तो ...

* कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखो ।

स्वयं अध्ययन

'दूरदर्शन चैनल' पर दिखाए जाने वाले किसी अनोखे जीव की जानकारी प्राप्त करो ।

अध्ययन कौशल

KN12F6

*** चित्रों को पहचानकर जलचर, नभचर, थलचर और उभयचर प्राणियों में वर्गीकरण करो ।**

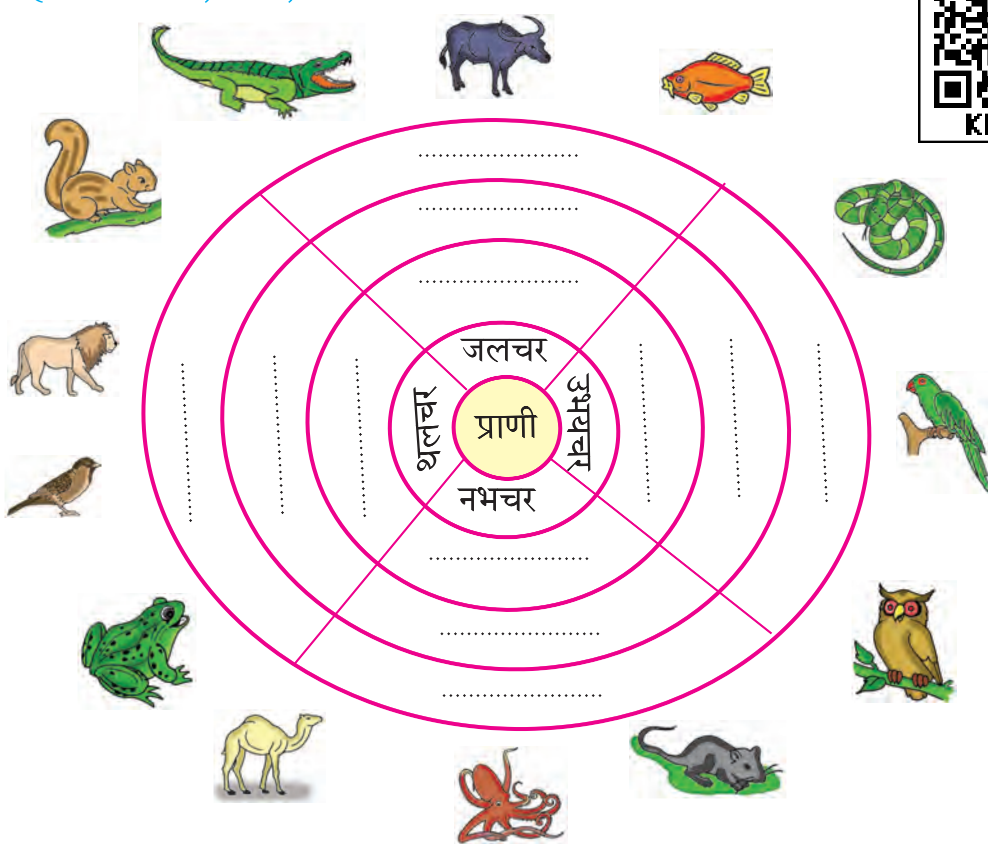

● पढ़ो, समझो और गाओ :

९. वह देश कौन-सा है ?

– रामनरेश त्रिपाठी

जन्म : ४ मार्च १८८९ **मृत्यु :** १६ जनवरी १९६२ **रचनाएँ :** 'मिलन', 'स्वप्न', 'पथिक', 'मानसी' आदि कृतियों के अतिरिक्त आपने बालोपयोगी साहित्य भी लिखा है । **परिचय :** आप राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं ।

प्रस्तुत कविता में भारत की महिमा एवं उसकी सुंदरता को बताया गया है ।

*** चित्र के आधार पर काल संबंधी वाक्य बनाओ और समझो :**

कल ⟵ आज ⟶ कल

मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है,
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है वह देश कौन-सा है ?
जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय वह देश कौन-सा है ?
नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं,
सींचा हुआ सलोना वह देश कौन-सा है ?
जिसके बड़े रसीले फल, कंद, नाज, मेवे,
सब अंग में सजे हैं वह देश कौन-सा है ?
जिसमें सुगंधवाले सुंदर प्रसून प्यारे,
दिन-रात हँस रहे हैं वह देश कौन-सा है ?

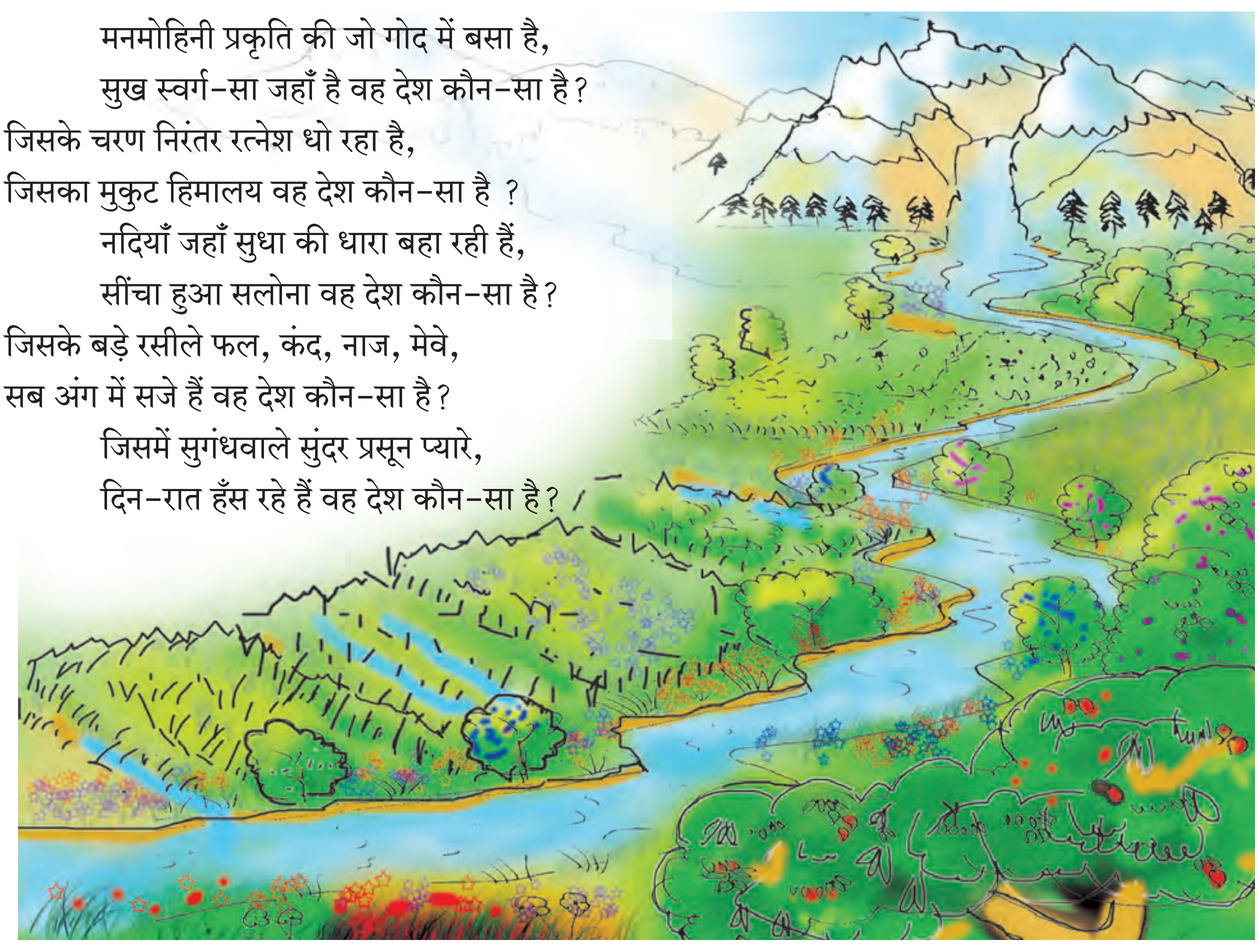

❑ विद्यार्थियों से कविता को हाव-भाव के साथ सामूहिक गवाएँ । भावार्थ समझाकर अर्थ पूछें । उनमें देशप्रेम की भावना को विकसित करें । कविता में आए काल (था, है, रहेगा) समझाएँ । काल के भेदों सहित अन्य वाक्य कहलवाएँ और दृढ़ीकरण करवाएँ ।

जरा सोचो ..... बताओ

यदि हिमालय की बर्फ पिघलना बंद हो जाए तो .....

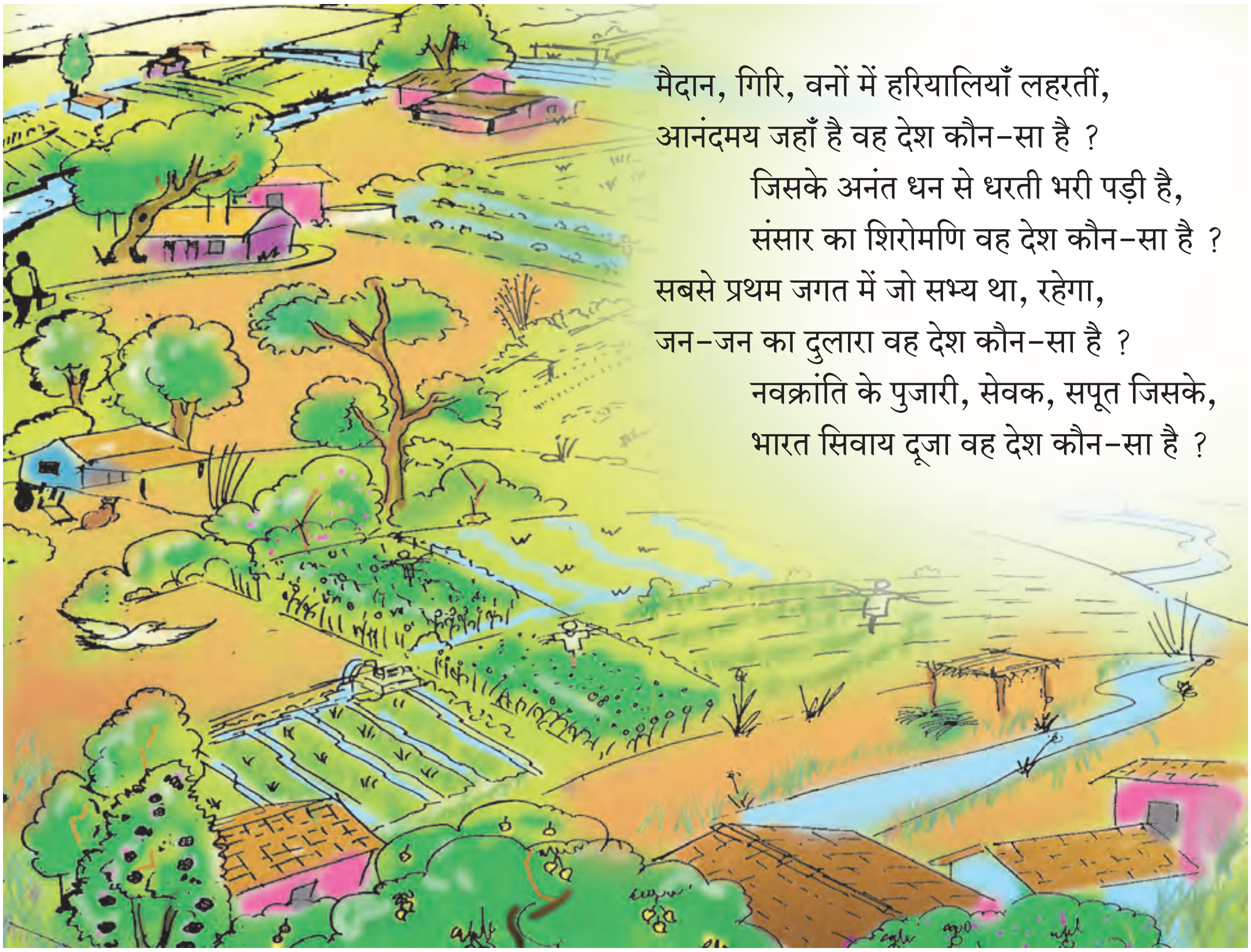

मैदान, गिरि, वनों में हरियालियाँ लहरतीं,
आनंदमय जहाँ है वह देश कौन-सा है ?
जिसके अनंत धन से धरती भरी पड़ी है,
संसार का शिरोमणि वह देश कौन-सा है ?
सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था, रहेगा,
जन-जन का दुलारा वह देश कौन-सा है ?
नवक्रांति के पुजारी, सेवक, सपूत जिसके,
भारत सिवाय दूजा वह देश कौन-सा है ?

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

मनमोहिनी = मन को मोहित करने वाली

निरंतर = सदैव

रत्नेश = सागर

सुधा = अमृत

सलोना = सुंदर

नाज = अनाज

प्रसून = फूल

गिरि = पर्वत

धन = संपत्ति

संसार = विश्व

दुलारा =प्यारा

भाषा की ओर

'खेलना' इस क्रिया के सकर्मक, अकर्मक, संयुक्त, सहायक और प्रेरणार्थक रूपों का वाक्यों में प्रयोग करो और लिखो ।

खोजबीन

'परमवीर चक्र' पुरस्कार प्राप्त सैनिकों की सूची बनाओ ।
देखें (www.paramvirchakra.com)

सुनो तो जरा

देशभक्ति पर आधारित कविता सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

अपने परिवेश में शांति किस प्रकार स्थापित की जा सकती है ।

वाचन जगत से

वैज्ञानिक की जीवनी पढ़ो और उसके आविष्कार लिखो ।

मेरी कलम से

क्रमानुसार भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री के नाम लिखो ।

* इस कविता के आधार पर भारत की विविधता एवं विशेषताएँ सात-आठ वाक्यों में लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

ऐतिहासिक वास्तुओं का संरक्षण करना हमारा कर्तव्य है ।

विचार मंथन

।। स्वतंत्रता मेरा जन्म सिद्‌ध अधिकार है ।।

स्वयं अध्ययन

KN9XGT

* नीचे दिए गए राष्ट्रीय प्रतीकों के चित्र देखो और उनके नाम लिखो :

हमें जानो

* मार्ग पर चलते हुए तुमने कुछ यातायात संकेत देखे होंगे । इन सांकेतिक चिह्नों का क्या अर्थ है, लिखो :

* स्वयं अध्ययन-२ *

* चित्रवाचन करके अपने शब्दों में कहानी लिखो और उचित शीर्षक बताओ :

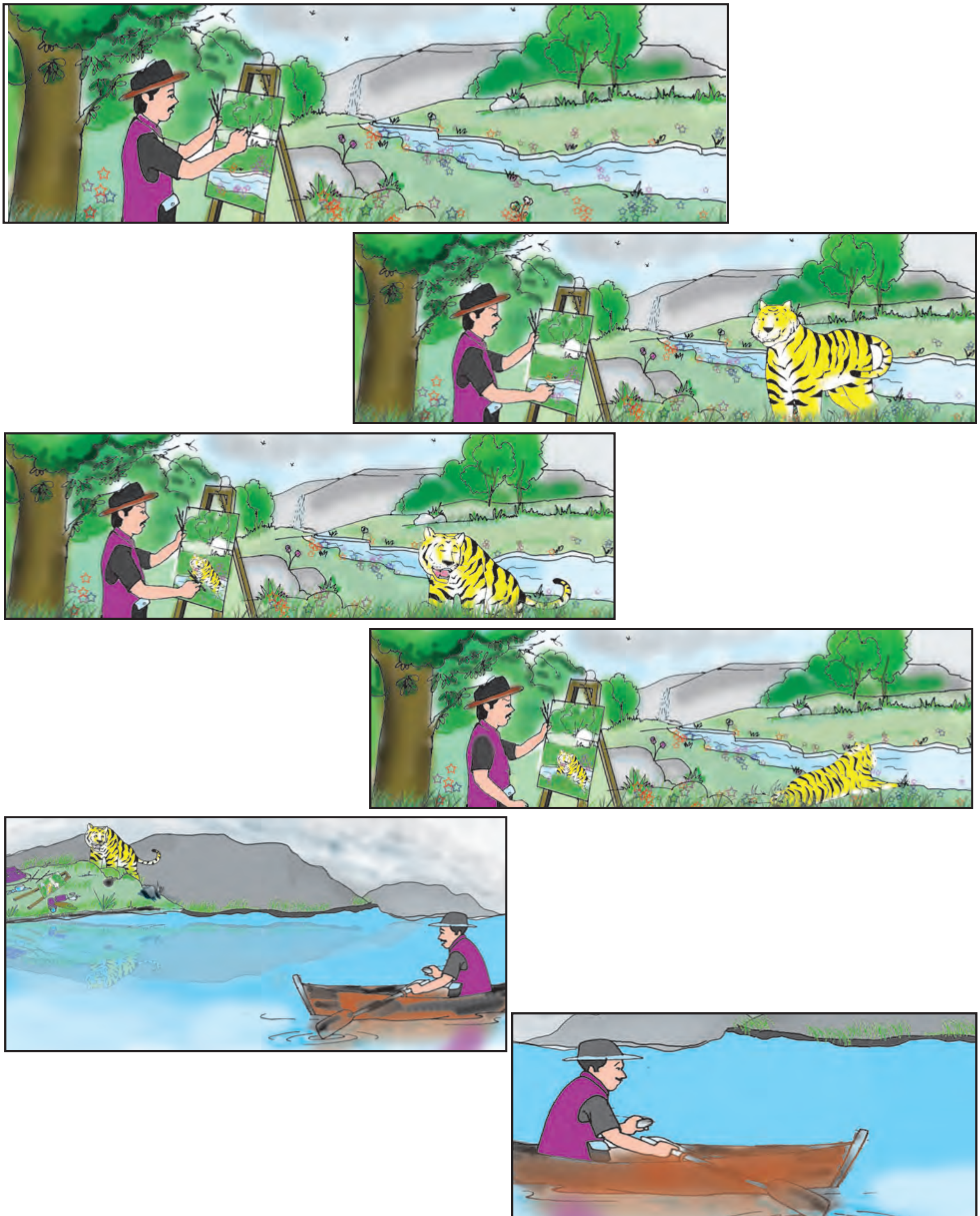

❑ विद्यार्थियों से ऊपर दिए गए चित्रों का क्रमानुसार निरीक्षण कराएँ । चित्र में कौन-कौन-सी घटनाएँ घटी होंगी, उन्हें सोचने के लिए कहें । उन्हें अन्य चित्रों एवं घटनाओं के आधार पर कहानी लिखने के लिए प्रेरित करें और उचित शीर्षक देने के लिए कहें ।

✻ पुनरावर्तन – २ ✻

१. शाक (पत्तोंवाली) और सब्जियों के पाँच–पाँच नाम सुनो और सुनाओ ।

२. एक महीने की दिनदर्शिका बनाओ और विशेष दिन बताओ ।

३. १ से १०० तक की संख्याओं का मुखर वाचन करो ।

४. अपना परिचय देते हुए परिवार के बारे में दस वाक्य लिखो ।

५. अक्षर समूह में से वैज्ञानिकों के उचित नाम बताओ और लिखो :

मी	भा	हो	भा		
नी	से	ज	भि	र	
मं	बं	जू	स	ल	
स्क	रा	र्य	भा	चा	
जे.	क	म	ला	ए.	पी.
जा	अ	न	म्म	की	ल
ना	व	क	ला	चा	ल्प

कृति/उपक्रम

अपने बारे में भाई/बहन से सुनो ।	इस वर्ष तुम कौन–सा विशेष कार्य करोगे, बताओ ।	सप्ताह में एक दिन कहानियाँ पढ़ो ।	पढ़ी हुई सामग्री की विश्लेषणात्मक प्रस्तुति करो ।

दो शब्द

यह पाठ्‌यपुस्तक विद्‌यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पाठ्‌यपुस्तक को स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु दो भागों में विभाजित करते हुए उसका 'सरल से कठिन की ओर' क्रम रखा गया है। यहाँ विद्‌यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन के भाषाई मूल कौशलों के साथ भाषा अध्ययन और अध्ययन कौशल पर विशेष बल दिया गया है । इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

पाठ्‌यपुस्तक में आए शब्दों और वाक्यों की रचना हिंदी की व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर की गई है । इसमें क्रमिक एवं श्रेणीबद्‌ध कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, अभ्यास और उपक्रम भी दिए गए हैं । विद्‌यार्थियों के लिए लयात्मक कविता, बालगीत, कहानी, संवाद, पत्र आदि विषयों का समावेश हैं । स्वयं की अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता के साथ-साथ वैविध्यपूर्ण स्वाध्याय के रूप में 'जरा सोचो...., 'खोजबीन', 'मैंने क्या समझा', 'अध्ययन कौशल' आदि कार्यात्मक कृतियाँ भी दी गई हैं । सृजनशील गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले अभ्यास 'मेरी कलम से' 'वाचन जगत से', 'बताओ तो सही', 'सुनो तो जरा', 'स्वयं अध्ययन' तथा 'विचार मंथन' आदि का समावेश किया गया है । इन कृतियों में एक दृष्टिकोण रखने का प्रयास किया है जिसे समझकर विद्‌यार्थियों तक पहुँचाना और उनसे करवाना है ।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्‌यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्‌यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । स्वाध्याय में दिए गए निर्देशों के अनुसार पाठ्‌यसामग्री उपलब्ध कराते हुए उचित मार्गदर्शन करें तथा आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं करवाएँ । व्याकरण (भाषा अध्ययन) को समझने हेतु 'भाषा की ओर'के अंतर्गत चित्रों तथा भाषाई खेलों को दिया गया है ताकि पुनरावर्तन और नए व्याकरण का ज्ञान हो । पारंपरिक पद्‌धति से व्याकरण पढ़ाना अपेक्षित नहीं है ।

आवश्यकतानुसार पाठ्‌येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास का अवसर विद्‌यार्थियों को प्रदान करें । पाठ्‌यसामग्री का मूल्यांकन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है इससे विद्‌यार्थी परीक्षा के तनाव से मुक्त रहेंगे । पाठ्‌यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं-श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन, भाषा अध्ययन (व्याकरण) और अध्ययन कौशल का सतत मूल्यांकन अपेक्षित है ।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्‌यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करेंगे और हिंदी विषय के प्रति विद्‌यार्थियों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना जागृत करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देंगे ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

हिंदी सुलभभारती इयत्ता ६ वी

₹ २७.००